राजस्थान की कला संस्कृति-1

हस्तलिखित नोट्स by Aadarsh Sir

REET, पटवार,वनपाल, वनरक्षक,BSTC,PTET,ग्रामसेव

ऐसे ही आपको हर विषय के नोट्स उपलब्ध कराते रहेंगे, आप RAJASTHAN CLASSES CHANNEL को SUBSCRIBE जरुर कर लीजिए डेली क्लास ज्वाइन करें पूर्णत निशुल्क

नोट-अपने प्रयास से सभी तथ्य सही किए है – फिर भी किसी प्रकार की त्रुटी पाई जाती है

तो राजस्थान क्लासेज जिम्मेदार नही होगा, आप सम्पर्क कर सकते है! Whatsapp- 8107670333

RAJASTHAN CLASSES

पीडीएफ के किसी भी भाग पर क्लिक करने पर आपको youtube क्लास मिल जाएगी

सभी पीडीएफ निशुल्क उपलब्ध करवाई जाएगी
पीडीएफ को ज्यादा से ज्यादा शेयर जरुर करें
आपके हित में सदैव तत्पर : आदर्श कुमावत

राजस्थान क्लासेज के साथ जुड़कर अपनी तैयारी को पंख दीजिये और विषयानुसार बनी प्लेलिस्ट से पढ़कर अपनी तैयारी बेहतर करें

टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

RAJASTHAN CLASSES

राजस्थान की कला एवं संस्कृति

टॉपिक	पेज
→ राजस्थान के लोकदेवता	1-12
→ राजस्थान की लोकदेवियां -	13-26
→ राजस्थान में धार्मिक संत-सम्प्रदाय -	27-39
→ राजस्थान के त्यौहार -	40-46
→ राजस्थान के प्रमुख मेले -	47-52
→	
→ राजस्थान में संगीत एवं लोकगीत →	1-6
→ राजस्थान के लोकनाट्य -	7-9
Trick → राजस्थान के लोकनृत्य →	10-17
Trick → राजस्थान के लोकवाद्य →	18-26
→ राजस्थान की लोककला, हस्तकलाएं -	27-33
→ राजस्थान की प्रमुख चित्रशैलियां =	34-39
→ राजस्थान के प्रमुख रीति रिवाज प्रथाएं -	40-48
→ राजस्थान की वेशभूषा - पहनावा =	49-53
→ राजस्थान के आभूषण -	54-56
→ राजस्थान की प्रमुख बोलियां, भाषा एवं साहित्य -	57-68
→ राजस्थान की जनजातियां	69-78

RAJASTHAN CLASSES

⇓ राजस्थान के लोक-देवता ⇓

⇒ लोकदेवता का तात्पर्य उन महापुरुषो से है। जिन्होने धर्म की रक्षा एवं जनहितार्थ अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।
इन्ही कारणो से स्थानीय लोगो ने इन्हे दैविक अंश के प्रतीक के रूप में स्वीकार कर लिया। और ये अपनी अलौकिक शक्ति एवं लोकमंगलकारी कार्यो हेतु पूजने लगे और लोक आस्था के प्रतीक हुए।

⇒ मारवाड़ आंचल में प्रमुख पांच लोकदेवता जिन्हे पांच पीर माना जाता है।
① रामदेवजी ② पाबूजी ③ हडबूजी
④ मांगलिया मेहाजी ⑤ गोगाजी।

⇓ रामदेवजी ⇓

⇒ रामसा पीर, रुणीचा रा धणी, बाबा रामदेव नेतल रा भरतार, पीरो के पीर के नाम से प्रसिद्ध।
सम्पूर्ण राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, पंजाब से भक्तगण मेले पर पहुंचते है।
⇒ जन्म - भाद्रपद शुक्ला द्वितीया वि.स. 1462 (सन 1405 ई. मे) उण्डू काश्मीर (शिव, बाड़मेर)
⇒ पिता का नाम - तंवर ठाकुर अजमाल जी
⇒ माता - मैणा दे
⇒ पत्नि - नेतल (निहाल दे)
⇒ डाली बाई - धर्म बहिन का नाता।
⇒ हिन्दू इन्हे कृष्ण का मानते है।
⇒ मुसलमान रामसा पीर के नाम से पूजा।
⇒ रामदेवजी का बड़ा भाई - वीरमदेव (बलराम का अवतार

RAJASTHAN CLASSES

⇒ छूआ छूत, ऊंच नीच बुराइयों को दूर कर सामाजिक समरसता एवं साम्प्रदायिक सद्भावना समाज में स्थापित की।
⇒ गुरु का नाम - बालीनाथ था
⇒ रामदेव जी ने बाल्यावस्था में ही सातमलोर (पोकरण) क्षेत्र में तांत्रिक भैरव राक्षक को वध करके उसका आन्तक खत्म किया।
⇒ रूणेचा "रामदेवरा" में रामसरोवर का निर्माण कराया।

⇒ भाद्रपद सुदी एकादशी वि. स. 1515 (सन् 1458) को इन्होने रूणिचा में जीवित समाधि ली।
⇒ रामदेवरा (रूणीचा मे) विशाल मन्दिर।
⇒ हर वर्ष भाद्रपद शुक्ला द्वितीया से एकादशी तक विशाल मेला भरता है।
⇒ भाद्रपद द्वितीया को जन्मोत्सव।
⇒ एवं भाद्रपद दशमी को समाधि उत्सव होता है।
⇒ तेरहताली नृत्य - कामड़ जाति की स्त्रियों द्वारा

⇒ इनके अन्य मन्दिर - मसूरिया पहाड़ी - जोधपुर बिराटिया (ब्यावर, अजमेर) सुरताखेड़ा (चित्तौड़)
⇒ एक मन्दिर "छोटा रामदेवरा" गुजरात में है।

⇒ प्रतीक चिन्ह पगल्या (चरण चिन्ह) बनाकर गांव गांव पूजे जाते है।
⇒ मेघवाल भक्तो को रिखिया कहा जाता है।
⇒ रामदेव जी का घोड़ा "लीला" था।
⇒ भक्त इन्हे कपड़े का बना घोड़ा चढ़ाते है।

RAJASTHAN CLASSES

→ भाद्रपद शुक्ला द्वितीया "बाबे रीबीज" (दूज)
→ चमत्कार की पर्चा, भजनों को ब्यावले
→ रामदेवजी के मन्दिरों को देवरा या देवल।
→ श्वेत या 5 रंगों की ध्वजा को नेजा कहा जाता।
→ रामदेवजी कवि थे - रचित ग्रन्थ - चौबीस बाणियाँ।
→ रात्रि जागरण को जम्मा कहते हैं।
→ मेघवालों द्वारा (रिखियों) द्वारा भजन किए जाते हैं।
→ मक्का से आए पाँच पीरों को रामदेवजी ने पंच पीपली स्थान पर पर्चा दिया था।
→ पंच पीरों ने कहा - म्हे तो केवल पीर हाँ और थे पीरां रा पीर।
→ छुआछूत का बहिष्कार कर सबको अपनाया
→ रामदेवजी की पड़ मुख्यतः जैसलमेर, बीकानेर
→ चूरमा, मिठाई, दूध, नारियल, धूप से पूजा।

→ रामदेवजी के पुजारी तंवर राजपूत होते हैं।
→ रामदेवजी की सौगन्ध को इनके भक्त रामदेवजी की आण कहते हैं।
→ सोने या चांदी के पत्तर पर मूर्ति खुदवाकर गले में पहनी जाती है पत्तरे को "फूल" कहते हैं।

→ रामदेवजी ब्यावला (पूनमचंद द्वारा रचित)
श्री रामदेवजी चरित (ठाकुर रूद्र सिंह तोमर)
श्री रामदेव प्रकाश - (पुरोहित रामसिंह)
रामसा पीर अवतार लीला (ब्राह्मण गौरीदासात्मक)
श्री रामदेवजी री वेलि (हरजी भाटी)
→ तीर्थ यात्रियों को जातरू कहा जाता है।
→ कामड़िया पंथ की स्थापना की।
→ लोक - देवताओं में सबसे लम्बा गीत इन्हीं का है।

RAJASTHAN CLASSES

लोकदेवता पाबूजी

→ पाबूजी राठौड़ का जन्म 13वीं शताब्दी (वि.स. 1296) फलौदी (जोधपुर) के कोलुमंड में।
पिता - धांधल जी राठौड़, माता - कमलादे
विवाह - सुप्यार दे (फूलमदे) = अमरकोट सूरजमल सोढ़ा
घोड़ी का नाम - केसर कालमी।
मारवाड़ में सर्वप्रथम ऊंट लाने का श्रेय इन्हीं को।
→ विवाह के फेरो से उठकर गायो को छुड़ाने के लिए निकले।
→ बहनोई जीन्दराव खींची से डेबल चारणी की गाए छुड़ाने देचू गांव मे आ गए।
देचू गांव में वि.स. 1333 में युद्ध में वीरगति को।
→ इन्हे गौ-रक्षक देवता के रूप में पूजा जाता है।

→ प्लेग रक्षक एवं ऊंटो के देवता
→ ऊंटो की पालक राइका (रेबारी) जाति इन्हे अपना आराध्य देव मानती है।
→ इन्हे लक्ष्मण का अवतार भी माना जाता है।
→ थोरी एवं भील जाति में सर्वाधिक लोकप्रिय
→ "पाबू धणी री वाचना" थोरी जाति द्वारा यशोगाथा।
→ कोलुमण्ड में इनका सबसे प्रमुख मन्दिर है।
→ जहां प्रतिवर्ष चैत्र अमावस्या को मेला।
→ पाबूजी के पवाड़े "माठवाद्य से" के साथ नायक एवं रेबारी जाति द्वारा गाए जाते है।
→ पाबूजी की फड़ नायक जाति "रावणहत्था" वाद्य से
→ पाबू प्रकाश - आशिया मोड़जी द्वारा लिखित
→ इनके पांच प्रमुख साथी - चान्दोजी, सांवतजी डेमाजी, हरमलजी राइका, सलजी सोलंकी।
→ मेहर जाति के मुसलमान इन्हे पीर कहते है।
→ इनका बोध चिन्ह भाला है।

RAJASTHAN CLASSES

। लोकदेवता - गोगाजी ।

→ जन्म - चौहान वंशीय गोगाजी का जन्म
→ 11 वीं सदी में चुरू के ददरेवा में।
→ पिता - जेवरसिंह, माता - बाछल देवी
→ गुरु - गोरखनाथ
→ विवाह - केलमदे (कोलुमंड की राजकुमारी)
परन्तु विवाह से पूर्व उसे सांप ने डस लिया।
गोगाजी क्रोधित हो मंत्र पढने लगे जिससे सांप मरने लगे
तब नागदेवता ने इन्हे सर्पों के देवता होने का वरदान।
→ घोड़ी का नाम - नीली घोड़ी
→ खेजड़ी वृक्ष के नीचे गोगाजी के चबूतरे या थान (गोगाजी की मेड़ी)
→ गोगाजी ने गौ रक्षार्थ एवं मुस्लिम आक्रान्ता (महमूद गजनवी) से देश की रक्षार्थ प्राण न्यौछावर
→ महमूद गजनवी ने इन्हे जाहरपीर कहा।
→ गोगापीर या गुगा के नाम से पूजे जाते है।
→ गोगाजी को गोगा बापा भी पुकारते है।
→ इन्हे सांपो का देवता माना जाता है।
→ किसान हल जोतने से पहले हल/हाली को गोगाराखड़ी
→ सर्प काटने पर गोगाजी के नाम की राखी बांधी जाती है।
→ जन्मस्थल - ददरेवा को शीर्षमेड़ी
→ समाधिस्थल - गोगामेड़ी (नोहर हनुमानगढ़) धुरमेड़ी
→ प्रतिवर्ष कृष्णा नवमी (भाद्रपद) विशाल मेला भरता है।
→ सांचोर - किलोरियो की ढाणी में भी गोगाजी की ओल्ली है।
→ मन्दिर में दरवाजे पर बिस्मिलाह अंकित है।
→ समाधिस्थल के बाहर नरसिंह कुंड है।
→ जिसकी पवित्र पानी की छींटे तीर्थयात्रियों के ऊपर दी जाती
→ गोरखाना तालाब की मिट्टी सर्पदंश के लिए पवित्र
→ इनको खीर, लापसी और चूरमा का भोग।

RAJASTHAN CLASSES

। लोकदेवता - हड़बू जी ।

→ जन्म - मूंडोल (नागौर)
→ पिता - मेहाजी सांखला.
→ मारवाड़ राव जोधा के समकालीन थे।
→ रामदेव जी, हड़बू के मौसेरे भाई थे जिनकी प्रेरणा से अस्त्र शस्त्र त्यागकर योगी बालीनाथ से दीक्षा ली।
→ बेंगटी में (फलौदी) मुख्य पूजा स्थल है।
→ पुजारी सांखला राजपूत होते है।
→ बेंगटी में स्थापित मन्दिर में हड़बू जी की गाड़ी।
→ हड़बू जी शकुनशास्त्र के भविष्यद्रष्टा थे।
→ इनके आशीर्वाद से एक कटार के माहात्म्य भेंट से जोधपुर के संस्थापक राव जोधा ने मंडोर दुर्ग को मेवाड़ से मुक्त कराकर अधिकार में।
→ सांखला हरभू का हाल - जीवन पर लिखा ग्रन्थ है।

→ मेहाजी मंगलिया)

→ पिता का नाम - गोपाल राज सांखला था।
→ पंवार क्षत्रिय परिवार में जन्म
→ ये मांगलियों के इष्ट देव के रूप में पूजे जाते है।
→ जैसलमेर के राव रांगदेव भाटी से (सेना की ओर) युद्ध करते वीर गति को प्राप्त हुए।
→ जोधपुर शासक राव दूदा के समकालीन थे।
→ मेहाजी भी शकुनशास्त्र के अच्छे ज्ञाता थे।
→ बापणी (जोधपुर) में इनका मन्दिर है।
→ भाद्रपद माह की कृष्ण जन्माष्टमी को मांगलिया राजपूत मेहाजी की अष्टमी मनाते है।
→ पूजा लेने वाले भोपों की वंश वृद्धि नहीं होती
→ वे गोद लेकर आगे पीढ़ी चलाते है।
→ घोड़ी का नाम - किरड़ काबरा था।

RAJASTHAN CLASSES

लोकदेवता- तेजाजी

→ जन्म वि.स. 1130 (1073 ई.) माघ शुक्ला चतुर्दशी खड़नाल नागौर परगने के नागवंशीय जाट परिवार में
पिता- ताहड़जी माता - रामकुंवरी
विवाह- पेमलदे (पनेर राजा रायमल की पुत्री) से
→ तेजाजी को परम गौरक्षक एवं गायों का मुक्तिदाता
→ काला एवं बाला देवता भी कहा जाता है।
→ लाछा गुजरी की गाएं मेरो से छुड़ाने हेतु 1103 ई. भाद्रपद शुक्ला दशमी को (सुरसरा, अजमेर) में प्राणोत्सर्ग
→ इनके थान पर सर्प व कुत्ते काटे प्राणी का इलाज
→ किसान बुवाई समय तेजागीत (तेजाटेर) गाते है।
→ तेजाजी विशेषत अजमेर जिले के लोकदेवता है।
→ इनके मुख्य मन्दिर- अजमेर के, सुरसुरा, ब्यावर, सेंदरिया एवं भावता मे है।
इनके जन्म स्थान खड़नाल में भी इनका मन्दिर है।
→ नागौर जिले के परबतसर में तेजाजी का विशाल मेला भाद्रपद शुक्ला दशमी को भरता है। बड़ा पशु मेला भी लगता है।
→ निर्वाण स्थली सुरसुरा मे तेजाजी की जागीर्ण निकाली जाती है।
→ सर्पदंश का इलाज करने वाले तेजाजी के भोपो को घोड़ला।
→ घोड़ी का नाम- लीलण (सिणगारी)
→ सभी गांवो में तेजाजी के थान एवं देवरे बने हुए है।
→ राज्य के सभी भागो में लगभग लोकदेवता तेजाजी को सर्पो के देवता के रूप में पूजा जाता है।
→ जाट जाति में इनकी अधिक मान्यता है।
→ कृषि कार्यो के उपकारक देवता, धौलिया वीर
→ लाछा गुजरी की गाएं छुड़ाते समय सर्पदंश लगने के कारण मृत्यु। पत्नि पेमलदे सती हुई। सेंदरिया गांव में सर्प ने डसा, सुरसुरा में मृत्यु।

RAJASTHAN CLASSES

4 लोकदेवता देवनारायण जी।

→ जन्म वि.स. 1300 (सन् 1243) में आसींद भीलवाड़ा बगड़ावत कुल के नागवंशीय गुर्जर में।
पिता - सवाई भोज माता - सेढू (सादूरानी)
जन्म नाम - उदयसिंह, घोड़ - लीलागर (नीला)
पत्नि - पीपलदे (धार नरेश जयसिंह की पुत्री)

→ अपने पिता की हत्या का बदला गिनाय के शासक को मारकर लिया।

देवमाली / देहमाली (ब्यावर) में इन्होंने देह त्यागी देवमाली को बगड़ावतों का गांव कहते है।

→ देवजी का मूल थान - गोठा दड़ावत (आसींद भीलवाड़ा)
अन्य देवरे, ब्यावर, देवधाम जोधपुरिया (निवाई टोंक)
देव डूंगरी पहाड़ी (चित्तौड़गढ़)

→ गुर्जर जाति इन्हें विष्णु का अवतार मानते है।

→ देवनारायण जी की पड़ गुर्जर भोपो द्वारा जंतर वाद्य की संगत में बांची जाती है।

→ राज्य की सबसे बड़ी पड़ - देवनारायण जी की पड़

→ भाद्रपद शुक्ला छठ (सप्तमी) को मेला भरता है।

→ देवधाम जोधपुरिया, बगड़ावतों की शौर्यगाथाओं का चित्रण

→ देवनारायण जी ऐसे प्रथम लोकदेवता जिन पर केन्द्रीय सरकार के संचार मंत्रालय ने 2010 में 5 रुपए का डाक टिकिट जारी किया था।

→ देवनारायण जी के जन्मदिन (भाद्रपद शुक्ला छठ) को गुर्जर लोग दूध नहीं जमाते, न ही बेचते।

→ देवजी को चूरमा व खीर का भोग।

→ बात देवजी बगड़ावत री, देवजी री पड़, मुख्य ग्रन्थ

→ महाराणा सांगा के अराध्य देव देवनारायण जी।

RAJASTHAN CLASSES

⇓ लोक देवता कल्लाजी ⇓

→ वीर कल्ला राठौड़ का जन्म - सामियाना गांव (मारवाड़)
पिता - अचलाजी गुरु - योगी भैरवनाथ।
आश्विन शुक्ला अष्टमी वि.स. 1601 (सन् 1544)
→ भक्त शिरोमणि मीरा इनकी चचेरी बहन थी।
→ चित्तौड़ के तीसरे साके (1567) महाराणा उदयसिंह की रक्षार्थ एवं की ओर से लड़ते हुए वीर गति प्राप्त।
→ घायल वीर जयमल को अपने कन्धे पर बिठाकर युद्ध किया
→ युद्धभूमि में चतुर्भुज के रूप में दिखाई गई वीरता के कारण चार हाथो वाले लोकदेवता के रूप में प्रसिद्ध

→ शेषनाग का अवतार माने जाते है।
→ सामलिया क्षेत्र (डूंगरपुर) में काले पत्थर की प्रतिमा
→ योगाभ्यास एवं जड़ी बूटियो का अच्छा ज्ञान
→ कल्लाजी के मन्दिर पर रविवार को भक्त आराधना करते है
→ मुख्य सेवक या भोपे को किरणधारी कहा जाता।
→ चित्तौड़गढ़ दुर्ग में भैरवपोल पर कल्लाजी की छतरी।
→ रनेला (रूणेला) इस वीर का सिद्ध पीठ है।

⇓ मल्लिनाथजी ⇓

जन्म - 1358 में मारवाड़ के राव तीड़जी के घर
माता - जीणादे, ये भविष्यद्रष्टा एवं चमत्कारी पुरुष थे।
→ मंडोर शासक राव चूंडा इनके भतीजे थे।
→ 1378 में मालवा सूबेदार निजामुद्दीन को परास्त किया।
→ चूंडा को नागौर (1397) व मंडोर विजय में सहायता दी
→ तिलवाड़ा बाड़मेर में इनका प्रसिद्ध मन्दिर
चैत्र कृष्णा एकादशी से चैत्र शुक्ला एकादशी तक मेला भरता।
पशु मेले के रूप में 15 दिन तक रहता है।
→ बाड़मेर के मालानी क्षेत्र का नाम इन्ही के नाम पर
→ इनकी रानी रूपादे का मन्दिर मालाजाव गांव में है।

RAJASTHAN CLASSES

→ भूरिया बाबा (गौतमेश्वर, गौतम बाबा) मीणा आदि वासियो के इष्टदेव।
→ मन्दिर - चोटीला (सिरोही) सूकडी नदी के तट पर
→ अनुयायी कभी गौतम बाबा की झूठी कसम नही खाते।
→ कहा जाता है कि गौतम ऋषि का आश्रम था
→ 13 अप्रैल से 15 अप्रैल तक हर वर्ष
→ प्रसिद्ध मेला भरता है!
→ अकाल मे भी गंगा कुंड का पानी नही सूखता।
→ दूसरा लोकतीर्थ - अरनोद (प्रतापगढ़)
→ जहां पर पापमुक्ति कुण्ड से लोग स्नान करते है
→ यहां प्रतिवर्ष वैशाख शुक्ला 11 से ज्येष्ठ कृष्णा 2 तक भव्य लक्खी मेला भरता है।

→ देवबाबा - पशु चिकित्सा व आयुर्वेद का ज्ञान गुजरों व ग्वालो के पालनहार के रूप मे पूजनीय नगला जहाज (भरतपुर) मे प्रसिद्ध मन्दिर भाद्रपद शुक्ला पंचमी व चैत्र शुक्ला पंचमी को (वर्ष मे दो बार) मेला भरता है।

→ तल्लीनाथ जी - जालौर के प्रसिद्ध लोकदेवता
वास्तविक नाम - गंगदेव राठौड़, पिता - बीरमदेव
→ अद्भुत शौर्य एवं चमत्कारिक रूप मे प्रसिद्ध
→ रोरगढ़ (जोधपुर) ठिकाने के शासक थे।
→ इनके गुरु जालन्धर नाथ थे।
→ पांचोटा गाँव (जालौर) पंचमुखी पहाड़ी के बीच घोड़े पर सवार तल्लीनाथ जी मूर्ति है।
→ आसपास के क्षेत्र (जालौर) को ओरण कहा जाता है वहां पर कोई पेड़ पौधे नही काटते।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ वीर फतांजी - सांथू गांव (जालौर) मे जन्मे लुटेरो से गांव की रक्षा करते प्राणो की बलि। सांथू गांव में मन्दिर, भाद्रपद शुक्ला नवमी को मेला

⇒ मामादेव - लकड़ी की विशिष्ट व कलात्मक तोरण की मूर्ति
⇒ वर्षा के देवता एवं गांव के रक्षक माने जाते।
⇒ मुख्यतः भैंसे की बलि चढ़ाई जाती है।

⇒ आलम जी - मालाणी प्रदेश (बाड़मेर) में पूजनीय स्थान - आलम जी का धोरा (ढांगी रेतीला टीला) भाद्रपद शुक्ला दूज को मेला भरता है।

⇒ वीर बग्गाजी - बिग्गा गांव (बीकानेर)
पिता - महन माता - सुल्तानी (जाट परिवार)
जाखड़ परिवार इन्हे कुलदेव के रूप में पूजते है

⇒ बाबा झुंझारजी - इमलोहा गांव (सीकर)
भाइयों के साथ मिलकर मुस्लिम लुटेरो से गायो व गांव की रक्षा करते हुए प्राण त्यागे।
प्रतिवर्ष रामनवमी को इमलोहा में मेला भरता है।
इनका थान प्रायः खेजड़ी वृक्ष के नीचे होता है।

⇒ वीर पनराज जी - मगा गांव (जैसलमेर)
ब्राह्मण परिवार की गायों को मुस्लिमों लुटेरो से बचाते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।
⇒ इनकी स्मृति मे पनराजसर (जैसलमेर)
⇒ वर्ष में दो बार मेला भरता है।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ हरिरामजी बाबा - सुजानगढ़ - नागौर मार्ग झोरड़ा गांव (चुरू) में इनका मन्दिर बना हुआ है।
पिता : रामनारायण माता - चन्दणी देवी।
चुरू सीकर नागौर झुन्झुनु में इनकी मान्यता।
हर वर्ष मेला भरता है।

⇒ केसरिया कुंवर जी - गोगाजी के पुत्र लोकदेवता के रूप में पूजे जाते है।
इनके थान पर सफेद रंग फहराते है।

⇒ भोमियाजी - राजस्थान के गांव गांव में भूमि के रक्षक देवता के रूप में पूजे जाते है।

⇒ रूपनाथजी - पाबूजी के बड़े भाई बूढ़ोजी के पुत्र अपनी पिता व चाचा कि मृत्यु का बदला जीदराव खीची को मारकर लिया।
कोलूमंड (जोधपुर) के पास पहाड़ी पर तथा सिंभूदड़ा (नोखामंडी) पर इनके प्रमुख स्थान है।
हिमाचल प्रदेश में इन्हे बालकनाथ के रूप में पूजते है।

⇒ डूंगजी, जवाहरजी = शेखावाटी क्षेत्र में धनी लोगो को लूटकर उनका धन गरीबो में बांटते।
1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में इन्होने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

⇒ महत्वपूर्ण तथ्य ① नावा = लोकदेवी-देवताओ के भक्त किसी भी धातु की बनी प्रतिकृति गले में बांधते है इसे फूल भी कहा जाता है।
⇒ चिरजा - देवी की पूजा व देवी के रात्रिजागों में गाया जाने वाला
⇒ थाला - सात देवियो के सम्मिलित प्रतिमास्वरूप को थाला कहते

RAJASTHAN CLASSES

राजस्थान की लोकदेवियाँ

⇒ राजस्थान के जनमानस मे शक्ति की प्रतीक के रूप में लोक देवियों के प्रति अटूट श्रद्धा, विश्वास और आस्था है।

⇒ करणी माता ⇐ देशनोक, बीकानेर

⇒ बीकानेर के राठौड़ो की कुल देवी
⇒ चूहो वाली देवी के नाम से विख्यात
⇒ इनका जन्म सुआप गांव, चारण जाति मे
⇒ पिता- श्री मेहोजी
⇒ मुख्य मन्दिर- देशनोक (बीकानेर)
⇒ मन्दिर में बड़ी संख्या मे "चूहे" करणी जी के काबे "कहे
⇒ सफेद चूहे करणी जी के दर्शन माने जाते है।
⇒ करणी जी का मन्दिर मठ कहलाता है।
⇒ मान्यता है कि करणी जी ने देशनोक कस्बा बसाया।
⇒ करणी जी की इष्ट देवी तेमड़ा माता
⇒ करणी जी के मन्दिर के पास तेमड़ेराय माता मन्दिर।
⇒ करणी जी का एक रूप सफेद चील भी है।
⇒ मन्दिर से दूर नेहड़ी नामक दर्शनीय स्थल है। यहाँ स्थित शमी (खेजड़ी) के एक वृक्ष पर माता डोरी बांधकर दही बिलोया करती थी।
⇒ इस वृक्ष की छाल उतारकर भक्तजन ले जाते है।
⇒ करणी जी के मठ के पुजारी चारण जाति के होते है।
⇒ करणी जी के आशीर्वाद एवं कृपा से ही राठौड़ शासक 'राव बीका' ने बीकानेर में राठौड़ वंश की स्थापना
⇒ करणी माता के ग्वाले दशरथ मेघवाल का देवरा है।
⇒ सावण भादो नामक दो बड़े कढ़ाह रखे हुए है।
⇒ मन्दिर का शुभ कार्य सेठ चान्दमल ढढ्ढा ने करवाया
⇒ प्रतिवर्ष दो बार मेले = चैत्र व आश्विन नवरात्रों में
⇒ 150 वर्ष भौतिक शरीर रखने के उपरान्त वि.स. 1595 की चैत्र शुक्ला नवमी को घिनेरू की तलाई के पास महाप्रयाण।

RAJASTHAN CLASSES

टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

RAJASTHAN CLASSES

जीण माता । सीकर

⇒ चौहान वंश की आराध्य देवी।
पिता - धन्धराय, भाई - हर्ष
⇒ मन्दिर - पृथ्वीराज चौहान प्रथम के शासनकाल मे राजा हट्टड़ द्वारा करवाया गया था। जिसमे जीणमाता की अष्टभूजी प्रतिमा है।
⇒ जीणमाता का मन्दिर - रैवासा ग्राम की आडावाला पहाड़ियो के मध्य स्थित।
⇒ हर्ष का मन्दिर भी पास में हर्ष की पहाड़ियो में।
⇒ पहाड़ के समतल स्थान पर जोगी तालाब स्थित।
⇒ जीणमाता ने आजीवन ब्रह्मचारिणी रहकर घोर तपस्या की
⇒ चैत्र व आश्विन माह की शुक्ला नवमी को मेला
⇒ घी व तेल की दो अखण्ड ज्योति सदैव प्रज्वलित।
⇒ जीण माता का गीत राजस्थानी लोक साहित्य में सबसे लम्बा गीत है।
कनफटे जोगियों द्वारा डमरू एवं सारंगी की संगत में
⇒ जीण माता पुराण वर्णित जयन्ती देवी है।
⇒ इनका अन्य नाम भ्रामरी देवी भी है।
⇒ जीण माता विशेष अवसर पर ढाई प्याला मदिरा सेवन।
⇒ मन्दिर में बकरों के कान की बलि।
⇒ मधुमक्खियों की देवी के नाम से जाना जाता।
⇒ शेखावाटी क्षेत्र की लोकदेवी।
⇒ मीणो की लोकदेवी भी माना जाता है।
⇒ दूसरा मन्दिर - नागौर के प्राचीन कस्बे मारोठ के पश्चिम में स्थित पर्वत की गुफा के भीतर जीणमाता का एक छोटा भव्य मन्दिर है।
⇒ हर्ष पर्वत पर चतुर्दशी के दिन हर्ष भैरू का मेला लगता है।

RAJASTHAN CLASSES

↓ कैलादेवी ↓ (करौली)

- करौली के यादवों की कुलदेवी
- मन्दिर- त्रिकूट पर्वत की घाटी करौली में
- इनकी आराधना में प्रसिद्ध लागुरिया गीत गाते है।
- मीणा व गुर्जर लोग लागुरिया नृत्य करते है।
- चैत्र नवरात्रा में चैत्र शुक्ला अष्टमी को इनका विशाल लक्खी मेला भरता है।
- देवी मन्दिर के सामने बोहरा भक्त की छतरी।
- मन्दिर की प्रमुख विशेषता- कनक दण्डवत है।
- मन्दिर का निर्माण 1900 में गोपालसिंह द्वारा करवाया
- मूर्ति प्रतिष्ठित केदार गिरी योगी ने कराई।
- कैलादेवी को अंजना माता या कैला मैया भी कहा जाता
- लोक मान्यता है कि कंस ने अपनी बहन देवकी की जिस नवजात कन्या को शिला पर पटककर मारना चाहा था वही कन्या देवयोग से करौली के त्रिकूट पर्वत पर कैलादेवी के रूप में अवतरित
- दुर्गा का एकमात्र मन्दिर जहां कोई बलि नहीं चढ़ती।

↓ शिलादेवी (अनपूर्णा) आमेर ↓

जयपुर कछवाहा राजवंश की आराध्य देवी

- अष्टभुजी काले पत्थर की मूर्ति को 16वी सदी के अंत में आमेर महाराजा मानसिंह प्रथम पूर्वी बंगाल के राजा केदार से युद्ध कर परास्त करके लाए।
- मानसिंह प्रथम ने मूर्ति राजमहल के पास स्थापित की
- मन्दिर निर्माण मिर्जाराजा जयसिंह ने करवाया।
- शिलादेवी महिषासुर मर्दिनी के रूप में प्रतिष्ठित है।
- अष्टभुजा मूर्ति एक पाषाण शिलाखण्ड पर उत्कीर्ण है।
- वर्ष में दो बार मेले (चैत्र व आश्विन- नवरात्रा)
- कलात्मक संगमरमर का कार्य महाराजा सवाई मानसिंह (द्वितीय ने) 1906 में करवाया था।

RAJASTHAN CLASSES

→ शीतला माता (चाकसू - जयपुर).
चेचक की देवी के रूप में प्रसिद्ध
→ अन्य नाम सैढल माता या महामाई।
→ मन्दिर- चाकसू की शील डूंगरी पर स्थित
→ निर्माण- जयपुर महाराजा माधोसिंह ने करवाया।
→ चैत्र कृष्णा अष्टमी (शीतलाष्टमी) मेला भरता
→ इस दिन रात का बनाया ठण्डा भोजन खाते है जिसे बास्योड़ा कहा जाता है।
→ शीतला माता की सवारी गधा है।
→ बच्चो की संरक्षिका देवी।
→ जांटी (खेजड़ी) को शीतला माता मानकर पूजी जाती।
→ शीतला माता की मूर्ति (खंडित प्रतिमा) है।
→ इनके पुजारी कुम्हार जाति के लोग होते है।
→ उत्तरी भारत में (मातामाई) तथा पश्चिमी भारत में माई अनामा कहा जाता।
→ इनका एक मन्दिर कागा क्षेत्र (जोधपुर) में है।
→ प्रारम्भ में इनका मन्दिर मेहरानगढ़ दुर्ग में था।

जमुवाय माता (जमुवारामगढ़, जयपुर)
→ ढूंढाड़ के कच्छवाहा राजवंश की कुलदेवी
→ मन्दिर जमुवारामगढ़ (जयपुर) में स्थित।
→ जमुवायमाता का प्राचीन नाम जामवन्ती था।
→ जमुवाय माता के नाम पर कस्बे का नाम जमुवारामगढ़
→ मन्दिर के सामने विशाल वटवृक्ष के नीचे भोमियाजी।
→ मूर्ति गाय व बछड़े के साथ प्रतिष्ठित।
→ मन्दिर का निर्माण दूलहराय ने करवाया। (तेजकरण)
अन्य प्रसिद्ध मन्दिर = ② भौड़की- झुन्झुनु
③ महरौली एवं मादनी मंडी - सीकर
④ भूणास - (नागौर)

RAJASTHAN CLASSES

॥ शाकम्भरी देवी ॥

⇒ साम्भर जयपुर में देवी का मन्दिर स्थित है।
⇒ शाकम्भरी माता चौहानों की कुलदेवी है।
⇒ चौहानो का आरम्भिक शासन काल सांभर के आसपास के क्षेत्र सपादलक्ष मे था।
याद रहे- साभर को ही देवयानी या सब तीर्थो की नानी कहा जाता है।
= मेला- भादवा सुदी अष्टमी को।
= राज्य मे इनके दूसरा मन्दिर - मलयकेतु पर्वत (उदयपुरवाटी, झुन्झुनू)

॥ आई माता (बिलाड़ा जोधपुर)

⇒ आईजी रामदेव जी की शिष्या थी।
⇒ सिरवी जाति के क्षत्रियों की कुल देवी
⇒ भक्त इनके मन्दिर को दरगाह भी कहते है।
⇒ इनका धाम बेडेर कहलाता है।
⇒ आई माता का धाम में अखण्ड ज्योति प्रज्वलित रहती। जिससे हमेशा केसर टपकती रहती है।
⇒ आई माता का जन्म मालवा में हुआ था बाद में इनके परिवार जन (मालवा) मांडू के सुल्तान के डर से मारवाड़ आ गए।
⇒ इन्होने एक पंथ चलाया जिसका नाम - आई पंथी

⇒ आई माता की गाड़ी को बैल कहा जाता है।
⇒ इनका बचपन नाम जीजी बाई था।
⇒ अपने पंथ का प्रथम दीवान गोविन्दसिंह रागेड़ को आई पंथी पाट पर नियुक्त किया।
⇒ इस देवी के मन्दिर में गुर्जरो का प्रवेश निषेध माना जाता है।

RAJASTHAN CLASSES

॥ नागणेची माता ॥

- जोधपुर के राठौड़ो की कुलदेवी।
- नागणेची की अठारह भुजाओं वाली प्रतिमा जोधपुर में राव बीका ने स्थापित की।
- नागणेची माता महिषामर्दिनी का स्वरूप है।
- नागणेची माता का दूसरा स्वरूप श्येन पक्षी बाज, चील है।
- कल्लाजी राठौड़ की कुलदेवी नागणेची माता थी।
- राव मालदेव के समय देवी की प्रतिमा भूलवश उदयपुर राजघराने में स्थानांतरित हो गई। विवाह के दहेज में जाने के कारण उदयपुर में भी नागणेची माता का पूजन किया जाता है।

॥ सुगाली माता ॥

- आउवा के ठाकुर परिवार (चौपावतो) की कुलदेवी। (वर्तमान में पाली में)
- इस देवी प्रतिमा के दस सिर और चौपन हाथ है।
- 1857 की क्रान्ति की देवी।
- सुगाली माता की मूर्ति ऊंचाई 3 फुट 8 इंच चौड़ाई 2 फुट 5 इंच है।
- वांगड म्यूजियम पाली में मूर्ति रखी गई।

॥ सच्चियाय माता ॥ सच्चिका माता।

- ओसियां (जोधपुर) में इनका प्रसिद्ध मन्दिर है।
- निर्माण - परमार राजकुमार उपलदेव द्वारा करवाया।
- सचियाय माता ओसवालों की कुलदेवी है।
- ओसिया का प्राचीन नाम उपकेश, उकेश था।
- प्रतिमा महिषासुर मर्दिनि स्वरूप है।

RAJASTHAN CLASSES

। चामुण्डा माता । जोधपुर
→ दुर्गा माता का सातवां अवतार
→ प्रतिहार शासकों की कुलदेवी
→ चामुण्डा माता का मूल मन्दिर जोधपुर से 30 किमी चामुण्डा गांव की पहाड़ी पर स्थित।
→ माना जाता है कि माता कि मूर्ति स्वतः ही उत्पन्न।
→ राव चूंडा की इष्ट देवी। आराध्य देवी।
→ राव चूंडा ने मंडोर में मन्दिर बनाया
→ राव जोधा ने 1460 में दुर्ग में स्थापित करवाई।
→ प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल तेरस को चामुण्डा माता के मन्दिर का जीर्णोद्धार दिवस मनाया जाता है।
→ सितम्बर 2008 में नवरात्रा अवसर पर भगदड़
→ 300 लोगो की असामयिक मौत
→ जांच आयोग - जसराज चौपड़ा की अध्यक्षता में

॥ लटियाल माता ॥ फलौदी - जोधपुर
- मन्दिर के पास खेजड़ी वृक्ष होने के कारण इन्हे खेजड़ीबेरी राय भवानी भी कहा जाता है।
→ कल्लों की कुलदेवी मानी जाती है।

॥ राणी सती ॥ झुन्झुनु
→ अग्रवाल जाति की राणी सती का वास्तविक नाम - नारायणी ॥ मृत्यु के बाद नारायणी - सती
→ मेला - भाद्रपद अमावस्या को।
→ इन्हें दादीजी भी कहा जाता है।
→ अब राज्य में सती की पूजा एवं महिमा मंडन पर रोक लगा दी ताकि किसी स्त्री को जबरन सती होने से रोका जा सके।
→ इनकी जाति में कुल 13 महिलाएं सती हो चुकी है।

RAJASTHAN CLASSES

आवड़ माता (जैसलमेर)

→ भाटी राजवंश की कुलदेवी

→ जैसलमेर के तेमड़ी भाखर पर इनका मन्दिर

→ सुगनचिड़ि को आवड़ माता का स्वरूप मानते है।

→ आवड़ माता को हिंगलाज माता का अवतार मानते है।

→ आवड़ माता को तेमड़ाई भी कहा जाता है।

→ मांड प्रदेश में इनकी आस्था से सात मन्दिरों का निर्माण करवाया गया।

① काला डुंगराय माता- मन्दिर का निर्माण 1998 महारावल जवाहरसिंह ने करवाया

② आईनाथ जी/खांगिया माता- जैसलमेर के भाटी राजवंशो की कुलदेवी

③ तनोटराय का मन्दिर- सेना के जवानों की देवी धार की वैष्णोदेवी, माल वाली देवी।

भारत और पाकिस्तान युद्ध के समय तनोट माता ने अपनी शक्ति से देश की रक्षा की। 16 नवम्बर 1965 को पाकिस्तान की ओर से बम बरसाने पर भी तनोट के चारो ओर सुरक्षा रही

→ भारतीय जीत का प्रतीक (विजयस्तम्भ) जो तनोट माता मन्दिर के सामने बना हुआ है।

④ घंटियाली राय का मन्दिर-

⑤ तेमड़ेराय का मन्दिर चारण जाति के लोग इस स्थान को द्वितीय हिंगलाज भी कहते है।

⑥ देगराय का मन्दिर- देवीकोट-फलसूण्ड मार्ग पर स्थित

⑦ भादरिया राय माता मन्दिर-

→ 1888 में आश्विन शुक्ला पूर्णिमा को मंदिर प्रतिष्ठा

→ हरवंश सिंह निर्मल साधु ने यहां तपस्या की एक सुमित्रत सबसे बड़ा पुस्तकालय भी निर्मित है।

→ सरस्वती का एक अनूठा संग्रह है।

RAJASTHAN CLASSES

अम्बिका माता - जगत :(उदयपुर)

- जगत अम्बिका मन्दिर मेवाड़ का खजुराहो कहलाता है।
- राजा अल्लट के काल में महामारू शैली में निर्मित
- यहां नृत्य गणपति की विशाल प्रतिमा स्थित है।
- यह मन्दिर शक्तिपीठ कहलाता है।

पथवारी माता -

- पथवारी देवी गाँव के बाहर स्थापित की जाती है।
- इनके चित्रों में नीचे काला - गोरा भैरू तथा ऊपर कावड़िया वीर व गणेश का कलश बनाया जाता है
- तीर्थयात्रा की सफलता की कामना हेतु पूजी जाती है।

नकटी माता -

- जयपुर के निकट जय भवानीपुरा में नकटी माता का प्रतिहार कालीन मन्दिर है।

ब्राह्मणी माता -

- सोरसन ग्राम अन्ता (बारां) में विशाल प्राचीन मन्दिर
- जहां देवी की पीठ का श्रृंगार होता है।
- और पीठ की ही पूजा अर्चना की जाती है।
- यह अकेला मन्दिर जहां देवी के पीठ की पूजा होती है अग्र भाग की नहीं।
- यहां माघ शुक्ला सप्तमी को गधो का मेला भरता है।

जिलाणी माता -

बहरोड़ कस्बा अलवर में इनका प्रसिद्ध मन्दिर प्रतिवर्ष 2 बार मेला।

जिलाणी गुजरी ने मुस्लिम शासकों द्वारा जबरन पकड़े गए हिन्दुओं को बलात् मुसलमान बनाने प्रयत्नों को अपनी बहादुरी व पराक्रम के बल पर निष्फल कर दिया।

RAJASTHAN CLASSES

कैवाय माता - किणसरिया गांव (नागौर)

1000 ऊंची पर्वत चोटी पर कैवाय माता का मन्दिर
→ साम्भर के चौहान शासक दुर्लभराज के सामंत चच्चदेव (दहिया वंश) ने वि.स. 1056 अक्षय तृतीया (वैशाख सुदी 3) को करवाया।
→ मन्दिर के रंगमंडप में ये शिलालेख उत्कीर्ण है।
→ काला भैरव की दो मूर्तियां विराजमान।

आशा पुरी माता (जालौर)

→ मोदरा गाव या महोदरी माता के नाम से भी जाना जाता
→ इनका मन्दिर जालौर के मोदरां स्थान पर स्थित है।
→ जालौर के सोनगरा चौहानो की कुलदेवी।
→ यह मूर्ति लगभग 1000 वर्ष पुरानी है।
→ भगवती दुर्गा का नाम भी महोदरी उल्लेखित है।

सुन्धा माता (सुंड) जालौर।

→ दांतलावास ग्राम की सुंड पर्वत पर प्रसिद्ध मन्दिर
→ जालौर चौहान शासको का एक शिलालेख उत्कीर्ण
→ चामुण्डा देवी (सुन्धा माता) को सुंधा माता भी।
→ मन्दिर के मार्ग में एक जलकुण्ड "काडिया दरा" एवं महात्मा राबड़ नाथ का धूणा, पाटलियो की पाँख यहां 40 फीट ऊंचाई से झरना गिरता है।
नागिनी तीर्थ, भूरेश्वर महादेव का लिंग।
→ सुंधा माता के केवल सिर की पूजा की जाती है।
→ अधरेश्वरी माता भी कहते है।
→ मेला - वैशाख एवं भाद्रपद में शुक्ला त्रयोदशी से पूर्णिमा तक मेले भरते है।

→ त्रिपुर सुन्दरी (तलवाड़ा ग्राम बांसवाड़ा)
→ उमराई गांव में मां त्रिपुरी का प्रसिद्ध मन्दिर
→ मां त्रिपुर सुन्दरी गुजरात के सोलंकी राजा सिद्धराज जयसिंह की इष्ट देवी थी।
→ देवी के पीठ की स्थापना तीसरी सदी पहले की है।
→ चान्दा भाई (पाता लुहार) ने मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाया
→ मेवाड़ के गुहिलों की भी परम श्रद्धा थी।
→ मन्दिर गर्भगृह में अठारह भुजाओं वाली (काली)
→ काले पत्थर की आकर्षक प्रतिमा विराजमान है।
→ मूर्ति के निचले भाग में श्रीयंत्र उत्कीर्ण है।
→ नवरात्रों में यहां विशाल मेला भरता है।

दधिमति माता ⇓ गोठ-मांगलोद-नागौर
→ जनश्रुति के अनुसार स्वतः उत्पन्न प्रतिमा का कपाल ही निकल पाया जिससे इन्हें कपालपीठ कहा जाता
→ माता की प्रतिमा के ठीक सामने संवत् 289 का शिलालेख लगा हुआ है।
→ यह माता दाहिमा / दायमा / दाधिच ब्राह्मणों की कुलदेवी
→ चैत्र आश्विन नवरात्रों में विशाल मेला भरता है।

→ बीसलपुर (विराट्रा) माता = चौहटन बाड़मेर
लाख एवं मुड़ग्ल वृक्षों के बीच रमणीक पहाड़ी क्षेत्र पर
→ माता विराट्रा भोपों की कुलदेवी है
→ नारियल की जोत एवं बकरों की बलि चढ़ाई जाती।

→ अर्बुदा माता ⇐ माउंट आबू (सिरोही)
→ 4200 फीट ऊंची पहाड़ी अर्बुदाचल की अधिष्ठात्री देवी
→ देवी की मूर्ति दूर से देखने पर भूमि का स्पर्श करते हुए नहीं देख सकते इसीलिए अधरदेवी भी कहते हैं
→ चैत्र पूर्णिमा व आश्विन पूर्णिमा को मेला भरता है।

RAJASTHAN CLASSES

- छींक माता - जयपुर
गोपालजी के रास्ते जयपुर में इनका मन्दिर।
माघ सुदी सप्तमी को छींक माता की पूजा

भद्रकाली (हनुमानगढ़)
प्रतिवर्ष चैत्र एवं आश्विन माह के शुक्ल पक्ष में नवरात्रा के अवसर पर भव्य मेला।

॥ सीता माता अभयारण्य ॥
प्रतापगढ़ के सीताबाड़ी गांव से 2 कि.मी. की दूरी पर सीता माता अभयारण्य में स्थित प्राचीन मन्दिर।
→ सीता माता मन्दिर में ज्येष्ठ अमावस्या को मेला।
→ मान्यता है कि माता सीता ने अन्तिम दिन यहीं बिताएं लव कुश दोनो को यहीं जन्म दिया
- दो जलकुण्ड (लव व कुश) एक में गर्म तो दूसरे में ठण्डा पानी (सदैव)
→ यहां निकट वाल्मीकि गुफा और आश्रम भी है।

→ विंध्यवासिनी - एकलिंगजी के पास उदयपुर में प्राचीन मन्दिर
→ देवी की प्रतिष्ठा का श्रेय हारीत ऋषि को जाता है

→ दंतमाता माता - कोटा शहर से 20 कि.मी. दूर मन्दिर
यह देवी कोटा राजपरिवार की कुलदेवी।

→ चौथमाता - चौथ का बरवाड़ा (सवाईमाधोपुर) मन्दिर के पीछे गोरे व काले भैरू के मन्दिर

→ गायत्री माता - पुष्कर में, यह देवी शापविमोचनी देवी के रूप में मानी जाती है।

RAJASTHAN CLASSES

→ सावित्री माता - पुष्कर के दक्षिण भाग में रत्नागिरी पहाड़ी पर (प्रजापिता ब्रह्मा की पत्नि) का पौराणिक मन्दिर (भाद्रपद शुक्ला अष्टमी को मेला)

→ घेवर माता - राजसमंद (राजसमंद की पाल का पहला पत्थर घेवरबाई के हाथो से रखा गया)
→ क्षेमकारी माता - भीनमाल (जालौर)
→ भदाणा माता (भदाणा - कोटा)
→ आवरी माता (निकुम्भ, चित्तौड़गढ़)
→ उंहाला माता (बल्लभनगर (उदयपुर)
→ खोडियार देवी - खोडाल लोंगीवाला (जैसलमेर)
→ बड़ली माता - आकोला (चित्तौड़गढ़) बेड़च के किनारे
→ नाराणी माता - सरिस्का वन में बरवाड़गढ़ी पर राजगढ़ (अलवर) नाई जाति की कुलदेवी।
→ बाण माता - उदयपुर। सिसोदिया राजवंश की कुलदेवी
→ अबुद्देश्वरी माता - परमार शासको की कुलदेवी
→ छिंछ माता - बांसवाड़ा
→ सीमल माता - बसंत गढ़ (सिरोही)
— भुवाल माता भुवाल ग्राम (नागौर)
— पीपाड़ माता - ओसियां जोधपुर
— हिंगलाज माता - नाडलाई (जोधपुर) लोद्रवा (जैसलमेर)
→ राठासण देवी - इनका मंदिर एकलिंग के पीछे। इनका दूसरा नाम बाघ्रश्येना भी है।
→ जोगणिया माता - भीलवाड़ा।

→ वे मेले जो वर्ष में दो बार भरते हैं -
① करणी माता ② दधिमति माता ③ सुन्धा माता
④ त्रिपुर सुन्दरी ⑤ अर्बुदा माता ⑥ जिलाणी माता
⑦ चामुण्डा माता ⑧ जीण माता ⑨ शिलादेवी

RAJASTHAN CLASSES

राजस्थान के प्रमुख राजवंशो की कुलदेवीयाँ

→ करणी माता (बीकानेर - बीकानेर राठौड़ो की कुलदेवी
→ ज्वाला माता - जोबनेर - खंगारोतो की कुलदेवी
→ कैलामाता, करौली - यादव राजवंश की कुलदेवी
→ शाकंभरी माता - सांभर - शाकंभरी चौहानो की कुलदेवी
→ ~~जमुवाय माता (जयपुर) कच्छवाहो राजवंश की कुलदेवी~~
→ स्वांगिया माता (जैसलमेर) भाटी राजवंश की कुलदेवी
→ राजेश्वरी देवी (भरतपुर) भरतपुर जाट वंश की कुलदेवी
→ नागणेची माता (जोधपुर) जोधपुर के सम्पूर्ण राठौड़ो की कुल
→ आशापुरी माता (जालौर) जालौर सोनगरा चौहानो की कुल
→ बाणमाता - (उदयपुर) सिसोदिया राजवंश की कुलदेवी
→ चामुण्डा माता - (मंडोर) गुर्जर प्रतिहार राजवंश की कुलदेवी
→ मंडोर, जोधपुर राठौड़ो की आराध्य देवी।
→ जीण माता - (सीकर) चौहानो की आराध्य देवी
→ शिला माता जयपुर → कच्छवाहा राजवंश की आराध्य देवी
→ जमुवाय माता (जमवारामगढ़) ढूंढाड़ के कच्छवाह राजवंश की कुलदेवी

प्रमुख जातियों की कुल देवियाँ

→ नारायणी माता - (अलवर) सैन (नाई) समाज की
→ दधिमति माता (नागौर) दाधिच ब्राह्मणो की कुलदेवी
→ करणी माता (देशनोक) चारणो की कुलदेवी
→ सुगाली माता - (पाली) आउवा के ठाकुरों की कुलदेवी
- सिकराय माता (झुन्झुनु) झुन्झुनु खण्डेलवालों की
→ सच्चियाय माता (जोधपुर) ओसवालो की कुलदेवी
- चौथ माता (चौथ का बरवाड़ा) कंजर समाज की कुलदेवी
- शीतला माता (चाकसू) बच्चों की माता
- आई माता (बिलाड़ा) सिरवी जाति की कुलदेवी
- राणी सती - (झुन्झुनु) अग्रवाल जाति की देवी
- लटियाल माता (फलौदी) कल्लों की कुलदेवी
- तनोट माता (जैसलमेर) सैनिको की देवी।

RAJASTHAN CLASSES

RAJASTHAN CLASSES

पीडीएफ के किसी भी भाग पर क्लिक करने पर आपको youtube क्लास मिल जाएगी

सभी पीडीएफ निशुल्क उपलब्ध करवाई जाएगी
पीडीएफ को ज्यादा से ज्यादा शेयर जरुर करें
आपके हित में सदैव तत्पर : आदर्श कुमावत

राजस्थान क्लासेज के साथ जुड़कर अपनी तैयारी को पंख दीजिये और विषयानुसार बनी प्लेलिस्ट से पढ़कर अपनी तैयारी बेहतर करें

टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

RAJASTHAN CLASSES

⇒ राजस्थान में धार्मिक सन्त-सम्प्रदाय ⇐

⇒ प्राचीन समय से राजस्थान में समाज धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत है। यहां लगभग सभी प्रमुख धर्मों व सम्प्रदायों के मतावलम्बी पाये जाते हैं। यहां सगुण एवं निर्गुण की उपासना पद्धति की अविरल धारा प्रवाहित हुई।

→ सगुण भक्ति धारा ←

⇒ शैव सम्प्रदाय - भगवान शिव की उपासना करने वाले शैव कहलाए राजस्थान में कापालिक एवं पशुपात सम्प्रदायों का काफी विस्तार हुआ।

- कापालिक - मे भैरव को शिव मानकर पूजा की जाती है सम्प्रदाय के साधु तांत्रिक, श्मशानवासी, शरीर पर भस्म लगाते हैं
- पाशुपात सम्प्रदाय - दण्डधारी लकुलीश को प्रवर्तक माना जाता है साधु दिन में कई बार स्नान करते हैं। हाथ में दण्ड धारण।

⇒ नाथ सम्प्रदाय - शैव मत का नवीन रूप आविर्भाव हुआ। पंथ के प्रमुख साधु - मत्स्येन्द्र नाथ, गोपीचन्द, भर्तृहरि, गोरखनाथ जोधपुर नाथ सम्प्रदाय महत्वपूर्ण केन्द्र रहा। दो शाखाएं ↓

① बैराग पंथ - इसका केन्द्र पुष्कर के पास रातड़ा में।
② मानानाथी पंथ - मुख्य केन्द्र महामन्दिर-जोधपुर में।

⇒ शाक्त सम्प्रदाय - शाक्त मतावलम्बी (शक्ति) दुर्गा की पूजा विभिन्न रूपों में करते हैं।
प्राचीन उत्खननों से प्रमाण मिले हैं कि मातृशक्ति के रूप में देवी की पूजा उस समय भी प्रचलित थी

RAJASTHAN CLASSES

→ वैष्णव सम्प्रदाय - विष्णु को प्रधान मानकर उसकी आराधना करने वाले वैष्णव कहलाए।
→ वैष्णव सम्प्रदाय जटिल कर्मकाण्ड तथा भयावह नरबलि एवं पशुबलि की क्रियाओं के विरोधी
- ईश्वर प्राप्ति हेतु भक्ति, कीर्तन, नृत्य आदि को प्रधानता
प्रचार आंदोलन कई सम्प्रदायों का आर्विभाव भारत भूमि पर हुआ प्रमुख का वर्णन ये है ↓

→ रामानुज (रामावत) सम्प्रदाय - दसवी सदी में दक्षिण भारत में प्रसिद्ध आचार्य यमुनाचार्य ने यत्न किया इन्ही के शिष्य रामानुजाचार्य थे, जिनका जन्म 1017 ई. आंध्रप्रदेश के तिरुपति नगर में हुआ।
— ब्रह्मसूत्र पर श्रीभाष्य और भक्ति का नया दर्शन विशिष्टाद्वैत प्रारम्भ किया।
राम को परब्रह्म मानकर पूजा इस कारण रामावत कहलाए

→ रामानन्दी सम्प्रदाय - रामानुज की शिष्य परम्परा में उत्तर भारत में वैष्णव आन्दोलन की कमान गुरु रामानंद के हाथ में थी उन्ही से प्रवर्तित मत रामानंदी कहलाए जिसमें ज्ञानमार्गी राम भक्ति की प्रधानता थी।
प्रमुख शिष्य - कबीर, धन्नाजी, पीपाजी, सेनानाई, सदनाजी, रैदास
— रामानन्द की भक्ति दास्य भाव की थी।
राजस्थान में रामानंद सम्प्रदाय की शुरुआत संत श्री कृष्णदास जी पयहारी ने की। रामानंद जी के शिष्य। पयहारी जी ने गलताजी, जयपुर में सम्प्रदाय का केन्द्र बनाया जो पहले नाथपंथियों की प्रमुख पीठ थी।
पयहारी जी के शिष्य अग्रदास जी ने रैवासा सीकर में अन्य पीठ स्थापित इनके मत को रसिक सम्प्रदाय भी कहते है। कुछ शिष्य आगे चलकर अलग मत से रामस्नेही सम्प्रदाय के नाम से विख्यात हुए।

RAJASTHAN CLASSES

→ निम्बार्क सम्प्रदाय - आचार्य निम्बार्क द्वारा प्रवर्तित यह वैष्णव दर्शन इस सम्प्रदाय के नाम से भी। राजस्थान में निम्बार्क सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ किशनगढ़ (अजमेर) के समीप सलेमाबाद में जो आचार्य परशुराम द्वारा स्थापित की गई। इस मत में भी कृष्ण व राधा की भक्ति की गई।

→ वल्लभ सम्प्रदाय (पुष्टिमार्ग) - कृष्ण भक्ति के इस मत का प्रवर्तन वल्लभाचार्य द्वारा 16वीं सदी के प्रारम्भ में किया गया। वृंदावन में श्रीनाथ मन्दिर स्थापना
- वल्लभाचार्य के पुत्र व उत्तराधिकारी विट्ठलदास ने अष्ट छाप कवि मंडली का संगठन किया।
औरंगजेब के आदेश द्वारा हिन्दू मन्दिरो को तोड़ने के डर से नाथ की प्रतिमा राजस्थान ले आए।
फरवरी 1672 मेवाड़ महाराणा राजसिंह की अनुमति से बनास नदी के तट पर बसे सीहड़ गाँव (नाथद्वारा) मे स्थापित कि गई। प्रमुख पीठ बनी।
- किशनगढ़ के शासक सांवतसिंह जी तो राजपाट छोड़कर वृन्दावन चले गए एवं कृष्ण भक्ति मे लीन हो गए अपना भी भक्त नागरीदास रख लिया।

→ ब्रह्म या गौडीय सम्प्रदाय → स्वामी मध्वाचार्य द्वारा गौड़ स्वामी द्वारा अधिक प्रचारित करने पर गौड़ कहलाया पूर्णप्रज्ञ भाष्य की रचना, द्वैतवाद नामक दर्शन। जन-जन तक फैलाने का कार्य बंगाल के गौरांग महाप्रभु चैतन्य ने किया।
- आमेर के मानसिंह प्रथम ने वृंदावन में गोविन्ददेव का मंदिर
- जयपुर के सवाईमाधोसिंह के समय चन्द्रमहल के पीछे राधागोविंद जी का मंदिर बनवाया।

RAJASTHAN CLASSES

↓ निर्गुण भक्ति धारा ↓

⇒ राजस्थान के लोक संत एवं सम्प्रदाय ⇐

⇒ सन्त जसनाथजी- (1482-1506 ई.)

जन्म- कार्तिक शुक्ला एकादशी वि.स. 1539 को हुआ
श्री हम्मीर जी जाट एवं रूपादे के पोष्य पुत्र।

- गोरखनाथ जी के पंथ में दीक्षित होकर गोरख मालिया (बीकानेर) में कठिन तप कर ज्ञान की प्राप्ति
- जसनाथी पंथ का प्रवर्तन कर निर्गुण-निराकार
- 24 वर्ष की अवस्था में जीवित समाधि
आश्विन शुक्ला सप्तमी 1563 (वि.स.) कतरियासर
- उपदेश- सिंभूदड़ एवं कोडा ग्रन्थ में संग्रहित

⇒ जसनाथी सम्प्रदाय ⇐

⇒ प्रमुख- कतरियासर (बीकानेर)

⇒ निर्गुण भक्ति को ईश्वर-साधना का मार्ग बताया।

⇒ अनुयायियों के लिए 36 धर्म नियम है.

- अनुयायी गले में काली ऊन का धागा पहनते है। साधु भगवा वस्त्र धारण करते है।
- धधकते अंगारो पर नृत्य करते हुए चलना-विशेषता
- सिकन्दर लोदी ने जसनाथ जी 'कतरियासर' में भूमि प्रदान की

जम्भेश्वर जी / जांभोजी - (1451-1534) ई.

- जन्म- भाद्रपद कृष्णा अष्टमी 1508 (वि.स.) पीपासर नागौर में पंवार वंशीय राजपूत परिवार में
पिता - ठाकुर लोहट, माता हंसादेवी
- बिश्नोई सम्प्रदाय का प्रवर्तन (विष्णु की उपासना)
- मृत्यु: मुकाम तालवा (लोखा, बीकानेर) में वि.स. 1593 यही इनकी समाधि स्थल है।
- प्रमुख कार्य स्थल - सम्भराथल (बीकानेर)

RAJASTHAN CLASSES

= जम्भसागर, जम्भ संहिता, विश्नोई धर्म प्रकाश = ग्रन्थ।

- विश्नोई सम्प्रदाय -

- सन् 1485 में सम्प्रदाय स्थापना की गई।
- प्रमुख पीठ - मुकाम तालवा (नोखा, बीकानेर)
- निर्गुण - निराकार ब्रह्म (विष्णु) की भक्ति पर बल
- अनुयायियों को 29 नियमों के पालन का उपदेश
- वृक्षों को काटना रोक, जीवों पर दया, प्रतिदिन सवेरे स्नान
- विष्णु भजन, काम, क्रोध, लोभ, मोह का त्याग
- उन्नीस नियम (20+9) विश्नोई कहलाए
- पर्यावरण संरक्षण हेतु प्राणों का बलिदान हेतु प्रसिद्ध
- जाम्भा - फलौदी, रामड़ावास - पीपाड़, जागुल - बीकानेर पर अन्य तीर्थ स्थल - अनुयायी - विश्नोई जाति

। सन्त दादू जी । (1544 - 1603 ई.)

- चैत्र शुक्ला अष्टमी वि. स. 1601 को हुआ
- साधना एवं कर्मभूमि - राजस्थान ही रही।
- किवन्दती है कि ये श्री लोदीराम जी को नदी में बहते हुए संदूक में मिले थे।
- इनके गुरु कबीर के शिष्य श्री वृदावंनजी थे।
- दादू सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया।
- मूर्तिपूजा, भेदभाव व आडम्बरो का विरोध
- प्रमुख उपदेश - दादू जी बाणी, दादू जी रा दूहा
- लेखन की कला "सधुक्कड़ी" थी।
- मृत्यु नरायणा (जयपुर) ज्येष्ठ कृष्णा अष्टमी वि. स. 1660 में हुई।
- दादूखोल या दादू पालकी - नरायणा में भैंख पहाड़ी पर स्थित गुफा जहां दादूजी ने समाधि ली।
- राजस्थान का कबीर "दादू" को कहा जाता है।
- लोक भाषा में राज्य मे निर्गुण भक्ति आन्दोलन फैलाया।

RAJASTHAN CLASSES

- दादू पंथ -

- प्रमुख पीठ - नरायणा (जयपुर)
- निर्गुण-निराकार-निरंजन ब्रह्म को अपना आराध्य।
- अहम् का परित्याग, संयम, नियम, साधु संगति हरि स्मरण, सद्गुरु का मार्गदर्शन।
- ढोंग, जाति, वर्ग भेद का घोर विरोध।
- दादूपंथी विवाह नही करते, गोद से पंथ चलाते।
- दादू पंथ के सत्संग अलख दरीबा कहलाते है।
- दादू पंथी 4 प्रकार के है।
  ① खालसा ② विरक्त ③ उत्तरादे ④ खाकी
- दादू के 52 प्रमुख शिष्यों को दादू पंथ के बावन स्तम्भ कहा जाता है।
  स्थानो पर विभिन्न गद्दिया (थम्बा) स्थापित किए।
- विराट मेला - नरायणा मे फाल्गुन शुक्ला पंचमी से एकादशी तक
- दादूजी के दो प्रमुख शिष्य - गरीबदास जी मिस्किनदास जी।

सन्त लालदास जी (सन् 1540-1648 ई.)

- इनका जन्म - धोलीदूब (अलवर) 1597 (वि. सं.) मे
  पिता - श्री चान्दमल माता - समदा
- मुस्लिम संत गद्दन चिश्ती से दीक्षा ली
- मृत्यु नगला (गांव) भरतपुर, समाधि - शेरपुर अलवर
- लालदासी सम्प्रदाय की स्थापना
- प्रमुख स्थल - शेरपुर एवं धोलीदूब (अलवर)
- लालदासी पंथ मे हिन्दू मुस्लिम एकता, रूढ़ियो व आडम्बरो का विरोध किया। पुरुषार्थ पर बल।
- ईश्वर को निर्गुण-निराकार, सर्वशक्तिमान माना है।

RAJASTHAN CLASSES

→ चरणदास जी (सन् 1703-1782)

⇒ जन्म - डेहरा (अलवर) भाद्रपद शुक्ला तृतीया 1760 संवत्
पिता - मुरलीधर, माता - कुंजो देवी के घर हुआ।

= प्रारम्भिक नाम - रणजीत, मुनि शुकदेव से दीक्षा

- पीले वस्त्र पहनते है, चरणदासी पंथ का प्रवर्तन।
- इन्होने नादिर शाह के आक्रमण की भविष्यवाणी की थी
- चरणदासी पंथ प्रमुख पीठ - दिल्ली
- सगुण व निर्गुण भक्ति मार्ग का मिश्रण है।
- मुख्यत मेवात व दिल्ली में, पंथ मे 42 नियम है।

सन्त रामचरण जी (1720-1798) ई.

- इनका जन्म सोडागाम (जयपुर) मे 25 जनवरी 1720 ई.
बचपन नाम - रामकिशन, पिता - श्री बखतराम।
दांतड़ा (मेवाड़ मे) कृपाराम से दीक्षा ली।
- प्रारम्भ भीलवाड़ा, फिर कुहाड़ गांव, अन्त में शाहपुरा आए।
- मृत्यु 5 अप्रैल 1798 को शाहपुरा (भीलवाड़ा) मे
- राजस्थान मे चार पीठे है (रामस्नेही सम्प्रदाय की)
① शाहपुरा ② रैण ③ सिंहथल ④ खेड़ापा
- प्रमुख उपदेश - गुरु की सेवा, सत्संगति, राम नाम स्मरण
- शाहपुरा शाखा की नींव रामचरण जी ने रखी।

सन्त दरियाव जी (1676-1733) ई.

→ जन्म - जैतारण (पाली) जन्माष्टमी सं. 1758
- पिता - मानजी धुनिया एवं माता - गीगण।
- रामस्नेही सम्प्रदाय रैण शाखा के प्रवर्तक
- मृत्यु - रैण (नागौर) में वि.सं. 1815 में
- प्रमुख पीठ - रैण (मेड़ता, नागौर)
- हिन्दू मुस्लिम समन्वय भावना को प्रोत्साहन दिया
- इन्होने गृहस्थ जीवन में रहते हुए गुरु भक्ति एवं राम नाम स्मरण को मोक्ष प्राप्ति का साधन बताया।

RAJASTHAN CLASSES

→ हरिराम राम दास जी
→ जन्म - मृत्यु सिंहथल (बीकानेर में) पिता - भागचंद
→ संत श्री जैमलदास जी रामस्नेही पंथ से दीक्षा
→ प्रमुख कृति "निसानी" थी, प्राणायाम, योग का उल्लेख
→ रामस्नेही शाखा - सिंहथल (बीकानेर)

→ रामदास जी (1726-1798) ई. तक
→ जन्म श्रीकमकोर ग्राम (जोधपुर)
पिता - शार्दुल एवं माता श्री माति अणमी
→ सिंहथल शाखा के हरिरामदास जी दीक्षा ली।
→ खेड़ापा शाखा स्थापित, खेड़ापा में मृत्यु
→ सतगुरु की सेवा और संसर्ग पर बल दिया।

सन्त हरिदास जी (1455-1528) ई.
- जन्म डीडवाना नागौर (कापड़ोद) गांव में
- तथा इनका मूल नाम - हरिसिंह सांखला था (मृत्यु - गादा (नागौर)
- प्रारम्भ में लुहार करते थे।
- एक सन्यासी के उपदेशों से ज्ञान प्राप्त हुआ।
- निर्गुण भक्ति का उपदेश देकर निरंजनी पंथ चलाया।
- निरंजनी सम्प्रदाय की पीठ - गादा (डीडवाना, नागौर)

→ अन्य लोक सन्त - (सन्त पीपा) 1383-1453 ई.
जन्म - गागरोन नरेश कड़वा राव खीची के घर, माता - लक्ष्मीवती
बचपन नाम - प्रताप सिंह, रामानन्द से दीक्षा
→ दर्जी समाज इन्हें आराध्य मानती है।
→ बाड़मेर के समदड़ी में पीपाजी का भव्य मन्दिर
→ कुछ समय टोडा ग्राम (टोंक) में रहे जहां पीपाजी की गुफा है
→ राजस्थान में शक्ति आन्दोलन का अलख जगाने वाले प्रथम संत
→ गागरोन में आहुवा कालीसिंध नदियों के संगम पर गुफा
वहां इनकी छतरी भी है, विशाल मेला भी भरता।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ पीपाजी द्वारा रचित ग्रन्थ "श्री पीपाजी की बाणी (हस्तलिखित
⇒ पीपाजी द्वारा रचित "चितावणी जोग" नामक उल्लेख।
⇒ चमत्कारो का उल्लेख. पीपा परचई, पीपा चरित में।

⇒ आचार्य महाप्रज्ञ ⇐

आचार्य महाप्रज्ञ का जन्म 14 जून 1920 टमोर (झुन्झुनु)
10 वर्ष की आयु में 29 जनवरी 1931 को आचार्य कालूगणी
से जैन धर्म की दीक्षा ली एवं साधु बने।
⇒ इन्होने सुजानगढ़ से अहिंसा यात्रा 2004 मे प्रारम्भ की
⇒ इनकी विद्वता को देखकर आचार्य तुलसी ने महाप्रज्ञ की उपाधि
⇒ 1979 को आचार्य तुलसी द्वारा युवाचार्य का पद दे दिया गया
⇒ 1991 में लाडनूं मे जैन विश्व भारती की स्थापना
⇒ राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने 15 अक्टूबर 2003
में सूरत में आचार्य महाप्रज्ञ के नेतृत्व में सभी धर्मो
के अधिकारियों का सम्मेलन आयोजित किया।
आचार्य महाप्रज्ञ ने लगभग 300 पुस्तको की रचना की

⇒ आचार्य महाश्रमण जी ⇐

- आचार्य महाप्रज्ञ जी का 9 मई 2010 को देहावसान
इनके बाद श्वेताम्बर सम्प्रदाय के 11 वे आचार्य महाश्रमणजी
(मूल नाम - दूगड़) बने। जन्म - 13 मई 1962 (सरदारशहर)
5 मई 1974 में सम्प्रदाय मे दीक्षा ग्रहण की।
तथा मुदित मुनि कहलाए।
महाश्रमण जी की पुस्तकें - महात्मा महाप्रज्ञ, सुखी बनो
सम्पन्न बनो, आओ हम जीना सीखे, दुःख मुक्ति का मार्ग

RAJASTHAN CLASSES

॥ सन्त सुन्दरदास जी ॥ 1596-1707 ई.

- दादूजी के परम शिष्य - सुन्दरदास जी का जन्म दौसा में खण्डेलवाल परिवार में हुआ।
- कई ग्रन्थ लिखे - ज्ञान समुद्र, ज्ञान सवैया, सुन्दर सार
- इनका निधन संवत 1764 में सांगानेर में हुआ।
- इन्होने दादू पंथ में नागा साधु वर्ग प्रारम्भ किया।
- पांच प्रमुख शिष्य- दयालदास, श्यामदास, दामोदरदास निर्मलदास एवं नारायण दास
- इनके पांचो थांबो को बड़े थाम्बे कहा जाता है।
- प्रधान पीठ - फतेहपुर का थाम्बा (पीठ) माना जाता है इन्हे सुन्दरदास फतेहपुरिया भी कहते है।
- भारतीय डाक विभाग ने 8 नवम्बर 1997 को 2 रुपए का डाक टिकिट जारी किया।

→ सन्त रज्जब जी - जन्म - सांगानेर 16वीं सदी में दादूजी के उपदेश सुनकर शिष्य बने.
विवाह के समय उपदेश सुनने के कारण जीवन भर दूल्हे के वेश में दादू उपदेशो का बखान किया।
रज्जब बाणी प्रमुख ग्रन्थ। स्वर्गवास - सांगानेर

→ सन्त धन्नाजी - रामानन्द के शिष्य, जन्म - 1472 संवत में धुवन ग्राम (टोंक) एक जाट परिवार में हुआ।
धन्नाजी द्वारा लिखित साहित्य - धन्नाजी की परची
धन्नाजी की आरती

→ सन्त जैमलदास जी - रामस्नेही सम्प्रदाय के प्रसिद्ध सन्त श्री माधोदासजी के शिष्य थे।
- सिद्धथल शाखा प्रवर्तक संत हरिरामदास को दीक्षा दी। इसीलिए इन्हे खेड़ापा शाखा का आदि आचार्य भी कहा जाता है।

RAJASTHAN CLASSES

→ भक्त कवि दुलमि - जन्म वि.सं. 1753 बागड़ क्षेत्र में कृष्ण भक्ति के उपदेश, बांसवाड़ा व डूंगरपुर को कार्यक्षेत्र इन्हें 'राजस्थान का नृसिंह' भी कहते है।

- सन्त रैदास जी - रामानन्द के शिष्य राजस्थान के नही थे परन्तु इन्होने समाज में आडम्बरो व भेदभावो का विरोध किया
- ये मीरा के समय चित्तौड़ में आए।
- इनकी छतरी चित्तौड़गढ़ के कुंभश्याम मन्दिर के कोने में बनी।

→ सन्त शिरोमणि मीरा - मीराबाई का जन्म सन् 1498 में मेड़ता के पास कुड़की ग्राम में हुआ।
- इनके पिता श्री रतनसिंह राठौड़ बाजोली के जागीरदार थे
- जन्म नाम पेमल था. मेवाड़ महाराणा सांगा के पुत्र भोजराज के साथ हुआ परन्तु कुछ वर्ष बाद ही उनकी मृत्यु हो गई।
- मीरा बाई ने सगुण भक्ति का सरल मार्ग अपनाया
- अंतिम समय गुजरात के डाकोर स्थित रणछोड़ मन्दिर में चली गई, मीरां की पदावलियां प्रसिद्ध है।
- मीराबाई को राजस्थान की राधा भी कहते है।

→ सन्त कबीर - कबीर पंथ राजस्थान के निम्न वर्ग के उद्धार में आंशिक उपयोगी सिद्ध हुआ।
कबीर की साखियां विशेष उल्लेखनीय है।

→ सन्त मावजी - जन्म साबला ग्राम (डूंगरपुर)
सन् 1727 में इन्हें बेणेश्वर स्थान पर ज्ञान प्राप्त हुआ बेणेश्वर धाम की स्थापना सन्त मावजी ने ही करवाई इनका प्रमुख मन्दिर व पीठ माही तट पर साबला गांव में है।
- इनकी वाणी (चोपड़ा) कहलाती है, जिन्होने निर्गुण व सगुण का समन्वय कर सहज भक्ति की उपासना।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ सूफी सन्त ⇐

मुस्लिम संत जो ईश्वरीय भक्ति में आजीवन लीन एवं जनकल्याण को मुक्ति का मार्ग बताए ऐसे मुस्लिम सन्तो को पीर कहा जाता है।

⇒ ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती- जन्म फारस के संजरी ग्राम में अजमेर आकर अपनी कार्यस्थली बनाया
अजमेर में इनकी दरगाह है एवं विशाल मेला भरा जाता है।
- यहां बादशाह अकबर पुत्र प्राप्ति के लिए पैदल जियारत आए
- हिन्दू मुस्लिम एकता का सर्वोत्तम स्थल।
⇒ पृथ्वीराज तृतीय के शासन में अजमेर आए।
- ये हजरत शेख उस्मान हारूनी के शिष्य थे।
- इनका इन्तकाल 1233 में अजमेर में ही हुआ

⇒ नरहड़ के पीर - (हजरत शक्कर बार)
- दरगाह - चिड़ावा (झुंझुनु), इनके शिष्य - शेख सलीम चिश्ती जिनके नाम पर अकबर ने अपने पुत्र सलीम (जहांगीर) नाम रखा
- नरहड़ के पीर की शेखावाटी में खूब विशेषता है
- पागल व्यक्ति यहां असाध्य ठीक हो जाते हैं।
- यह दरगाह भी साम्प्रदायिक सद्भाव का अनूठा स्थल।
- जन्माष्टमी के दिन उर्स का मेला
- बांगड़ के धणी के रूप में प्रसिद्ध

⇒ पीर फखरुद्दीन - दाऊदी बोहरा सम्प्रदाय के आराध्य पीर, गलिया कोट (हुंशारपुर) में इनकी दरगाह दाऊदी बोहरा समाज का प्रमुख धार्मिक स्थल

RAJASTHAN CLASSES

→ राजस्थान में अन्य निर्गुण भक्ति सम्प्रदाय

1 ⇒ अलखिया सम्प्रदाय - स्वामी लाल गिरि द्वारा 10 वी सदी के प्रारम्भ में इस निर्गुण भक्ति सम्प्रदाय की पीठ बीकानेर में है। ग्रन्थ - अलख स्तुति प्रकाश।

⇒ गूदड़ सम्प्रदाय - सन्तदास जी द्वारा प्रवर्तित
प्रमुख पीठ - दांतड़ा (भीलवाड़ा) सन्तदासजी गूदड़ी से बड़े वस्त्र पहनते थे इसलिए गूदड़ी सम्प्रदाय कहा गया।

⇒ नवल सम्प्रदाय - नागौर के संत नवलदास जी से प्रवर्तित
मुख्य मन्दिर - जोधपुर, उपदेश - नवलेश्वर अनुभववाणी

→ राजाराम सम्प्रदाय - संत राजाराम द्वारा प्रवर्तित।
उपदेश - हरे वृक्षों को न काटना एवं पर्यावरण का संरक्षण

⇓ विभिन्न धर्म, ग्रन्थ एवं पूजा स्थल ⇓

→ हिन्दू	वेद, पुराण, उपनिषद	मन्दिर
→	रामायण, भगवदगीता	
→ इस्लाम	कुरान शरीफ	मस्जिद
→ सिक्ख	गुरु ग्रंथ साहिब	गुरुद्वारा
→ ईसाई	बाईबिल	गिरिजाघर
→ जैन	जिनवाणी	मन्दिर
→ बौद्ध	त्रिपिटक	बौद्ध मठ
→ पारसी	जेंद अवेस्ता	अग्नि मन्दिर, अग्यारी
→ यहूदी	ओल्ड टेस्टामेंट	सिनेगोग

RAJASTHAN CLASSES

⇕ राजस्थान के त्यौहार ⇕

festivals of Rajasthan

⇒ राजस्थान में त्योहारो का आगमन छोटी तीज (श्रावण) शुक्ल पक्ष मे होता है। अर्थात् हरियाली तीज

⇒ कहावत - तीज त्योहारां बावड़ी, ले डूबी गणगौर।

⇒ तथा समापन गणगौर पर होना माना जाता है।

⇒ हिन्दुओ का नया वर्ष चैत्र शुक्ल एकम को होता है।

↓ हिन्दुओ के प्रमुख त्योहार

(त्योहार)	(तिथि)
⇒ आवणी तीज (छोटी तीज) -	श्रावण शुक्ला तीज
हरियाली तीज (पार्वती का प्रतीक। तीज माता की सवारी)	
⇒ रक्षाबंधन -	श्रावण पूर्णिमा
भाई बहिन का त्योहार, नारियल पूर्णिमा भी कहते है।	
⇒ बड़ी तीज, कजली तीज -	भाद्रपद कृष्णा तीज
सातुड़ी तीज, बूढ़ी तीज, अजली तीज भी कहते है। कजली तीज का मेला बूंदी मे भरता है, नीम की पूजा की जाती	
⇒ उब छठ, हल षष्ठी -	भाद्रपद कृष्णा 6
⇒ कृष्ण जन्माष्टमी -	भाद्रपद कृष्णा अष्टमी 8
⇒ गोगानवमी -	भाद्रपद कृष्णा नवमी
⇒ गवरी उत्सव -	भाद्रपद कृष्णा दशमी
⇒ कछबारस (पुत्र के लिए व्रत)	भाद्रपद कृष्णा 12
⇒ पोलियां अमावस -	भाद्रपद अमावस्या
⇒ गणेश चतुर्थी -	भाद्रपद शुक्ला 4
⇒ ऋषि पंचमी -	भाद्रपद शुक्ला 5
(सप्त ऋषि व अरुंधति की पूजा) संवत्सरी माहेश्वरी समाज की राखी	
⇒ हरतालिका तीज -	भाद्रपद शुक्ला तीज
⇒ राधाष्टमी -	भाद्रपद शुक्ला - 8
- जलझूलनी एकादशी -	भाद्रपद शुक्ला 11 (देवझूलनी ग्यारस)
⇒ श्राद्ध पक्ष (मृतबुजुर्गों का तर्पण)	भाद्रपद पूर्णिमा से आश्विन अमावस्या
⇒ सांझी त्योहार (कुंवारी कन्याओं का त्योहार)	

RAJASTHAN CLASSES

। आश्विन माह में होने वाले त्योहार ।

⇒ नवरात्रा - (शारदीय नवरात्र) आश्विन शुक्ला 1 से नवमी तक दुर्गा माता की पूजा।

⇒ दुर्गाष्टमी - आश्विन शुक्ला 8 (दुर्गामाता पूजन)

⇒ दशहरा - आश्विन शुक्ला - 10 (विजयादशमी)

लीलटाँस पक्षी का दर्शन शुभ, कोटा में दशहरा मेला

⇒ शरद पूर्णिमा (रास पूर्णिमा) आश्विन पूर्णिमा

नोट - आश्विन के कृष्ण पक्ष में कोई त्योहार नही।

(कार्तिक माह)

⇒ करवा चौथ - (पतियों की लम्बी आयु हेतु स्त्रियो द्वारा व्रत) कार्तिक कृष्णा 4

⇒ अहोई अष्टमी (पुत्र के लिए व्रत) कार्तिक कृष्णा 8

⇒ तुलसी एकादशी - कार्तिक कृष्णा 11

⇒ धनतेरस - कार्तिक कृष्णा 13 (धन की पूजा)

⇒ रूप चतुर्दशी (छोटी दीपावली) कार्तिक कृष्णा 14

⇒ दीपावली - कार्तिक अमावस्या

हिन्दुओ का सबसे बड़ा त्योहार, विक्रम संवत का शुभारम्भ महावीर स्वामी और दयानंद सरस्वती का निर्वाण इसी दिन

⇒ गोवर्धन पूजा व अन्नकूट - कार्तिक शुक्ला एकम

- राजस्थान में अन्नकूट महोत्सव नाथद्वारा (राजसमंद) में मनाया जाता

⇒ भैयादूज - (यम द्वितीया) कार्तिक शुक्ला दूज

⇒ गोपाष्टमी - कार्तिक शुक्ला अष्टमी 8

⇒ देव उठनी ग्यारस - कार्तिक शुक्ला 11

प्रबोधिनी एकादशी, मांगलिक कार्यो का प्रारम्भ

⇒ कार्तिक स्नान (पुष्कर मेला) - कार्तिक पूर्णिमा

⇒ मकर सक्रान्ति - 14 जनवरी

- लोग जयपुर के गलताजी धार्मिक सरोवर पर स्नान करते है।

- जयपुर व कोटा में यह दिन पतंगबाजी के लिए प्रसिद्ध

RAJASTHAN CLASSES

- माघ - माह के त्योहार -

⇒ तिल चौथ (सकट चौथ) - माघ कृष्ण 4
⇒ षटतिला एकादशी - माघ कृष्ण अष्टमी
⇒ मौनी अमावस - माघ अमावस्या
⇒ बसंत पंचमी (बसंत का आगमन) माघ शुक्ला 5

फाल्गुन (फागण) के त्योहार

⇒ ढूंढ - (पश्चिमी क्षेत्र मे) फाल्गुन शुक्ल 11
⇒ होली (होलिका) फाल्गुन पूर्णिमा

भक्त प्रहलाद की स्मृति मे मनाया जाने वाला त्योहार
इस दिन - लट्ठमार होली - श्री महावीर जी करौली
पत्थरमार होली - बाड़मेर, कोड़ामार होली - मिनाय अजमेर
अंगारो की होली - कैकड़ी, अजमेर, भीलो द्वारा गैर नृत्य

। चैत्र माह के त्योहार ।

⇒ धुलंडी - (रंगो का त्योहार) चैत्र कृष्ण एकम
⇒ धुडला चैत्र कृष्ण अष्टम
⇒ शीतलाअष्टमी (ठण्डा भोजन, बासोड़ा) - चैत्र कृष्ण अष्टमी
- शीतला माता मन्दिर पर मेला आयोजित होता है।
⇒ नववर्ष (नवरात्र) चैत्र शुक्ला एकम
⇒ नवरात्रा (मां दुर्गा की पूजा) वासंतीय → चैत्र शुक्ल 1 से 9
⇒ गुड़ी पड़वा - चैत्र शुक्ला एकम
⇒ गणगौर (शिव-पार्वती पूजा) चैत्र शुक्ला तीज

चैत्र कृष्ण एकम से चैत्र शुक्ल तृतीया तक (18 दिन तक)
- गणगौर जयपुर की प्रसिद्ध है. घूमर नृत्य किया जाता है।
- बिना ईसर की गवर जैसलमेर में पूजी जाती है।
- धींगा गवरी व बैंतमार मेला जोधपुर में, और उदयपुर मे धींगा।
- चैत्र शुक्ला पंचमी को गुलाबी गणगौर नाथद्वारा मे मनायी जाती है।
⇒ जयपुर व उदयपुर मे गणगौर की सवारी प्रसिद्ध है।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ अशोकाष्टमी (अशोक वृक्ष का पूजन) - चैत्र शुक्ला अष्टमी
⇒ रामनवमी (राम का जन्म दिवस) - चैत्र शुक्ला नवमी

↓ वैशाख माह के त्योहार ↓

⇒ आखा तीज (अक्षय तृतीया) - वैशाख शुक्ला तीज
(विवाह का एकमात्र अबूझ सावा) हजारो बाल विवाह
⇒ बुद्ध पूर्णिमा, पीपल पूर्णिमा - वैशाख पूर्णिमा।
⇒ नोट - कृष्ण पक्ष में कोई त्योहार नही है।

↓ ज्येष्ठ माह के त्योहार ↓

⇒ बडमावस या बड़ की पूजा - ज्येष्ठ अमावस्या
⇒ निर्जला एकादशी - ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी
⇒ बिना जल पीए महिलाएं उपवास करती है।

↓ आषाढ़ माह के त्योहार ↓

⇒ योगिनी एकादशी - आषाढ़ कृष्णा एकादशी
⇒ रथयात्रा - आषाढ़ शुक्ला 2
⇒ देवशयनी एकादशी (मांगलिक कार्य बन्द) - आषाढ़ शुक्ला एकादशी
⇒ गुरु पूर्णिमा (व्यास पूर्णिमा) - आषाढ़ पूर्णिमा

↓ श्रावण माह के त्योहार ↓

⇒ नाग पंचमी - (नागो की पूजा) - श्रावण कृष्णा 5
⇒ निडरी नवमी (नेवलो की पूजा) श्रावण कृष्णा 9
⇒ कामिका एकादशी (विष्णु की पूजा) श्रावण कृष्णा एकादशी
⇒ हरियाली अमावस श्रावण अमावस्या।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ एक ही तिथि के अनेको त्योहार।

⇒ एकादशी ⇒ जलझूलनी एकादशी - भाद्रपद शुक्ला 1
⇒ तुलसी एकादशी - (तुलसी की पूजा) - कार्तिक कृष्णा 11
⇒ देवउठनी ग्यारस (प्रबोधिनी एकादशी) - कार्तिक शुक्ला एकादशी
⇒ निर्जला एकादशी (- ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी
⇒ योगिनी एकादशी - आषाढ़ कृष्णा एकादशी
⇒ देवशयनी (मांगलिक कार्य बंद) - आषाढ़ शुक्ला एकादशी
⇒ कामिकी एकादशी (बिल्लपूजा) - श्रावण कृष्णा एकादशी

⇒ पूर्णिमा ⇒ रक्षाबंधन (भाई बहिन का त्योहार) - श्रावण पूर्णिमा
⇒ शरद पूर्णिमा - (रास पूर्णिमा) = आश्विन पूर्णिमा
⇒ कार्तिक स्नान (पुष्कर मेला) - कार्तिक पूर्णिमा
⇒ होलिका दहन - फाल्गुन पूर्णिमा
⇒ बुद्ध पूर्णिमा | पीपल पूर्णिमा - वैशाख पूर्णिमा
⇒ गुरु पूर्णिमा - आषाढ़ पूर्णिमा

⇒ अमावस - सतियां अमावस ⇒ भाद्रपद अमावस्या
⇒ दीपावली - कार्तिक अमावस्या
⇒ मौनी अमावस - माघ अमावस्या, बड़मावस - ज्येष्ठ अमावस्या
⇒ हरियाली अमावस - श्रावण अमावस्या

⇒ तीज ⇒ श्रावणी तीज - श्रावण शुक्ला तीज, आखातीज, वैशाख शुक्ला
⇒ बड़ी तीज, सातुड़ी तीज, कजली तीज, बूढ़ी तीज = भाद्रपद कृष्णा तीज
⇒

⇒ पंचमी - ऋषि पंचमी - भाद्रपद शुक्ला पंचमी,
- बसंत पंचमी - माघ शुक्ला 5,
⇒ अष्टमी - कृष्ण जन्माष्टमी - भाद्रपद कृष्णा 8, राधाष्टमी - भाद्र शुक्ला 8
⇒ दुर्गाष्टमी - आश्विन शुक्ला 8, अहोई अष्टमी - कार्तिक कृष्णा 8
⇒ गोपाष्टमी - कार्तिक शुक्ला अष्टमी, शीतलाष्टमी - चैत्र कृष्णा 8
अशोकाष्टमी - चैत्र शुक्ला अष्टमी

RAJASTHAN CLASSES

जैन समाज के त्यौहार।

⇒ ऋषभ जयन्ती - चैत्र कृष्णा नवमी (ऋषभदेव का जन्म तीर्थंकर)
⇒ महावीर जयन्ती चैत्र शुक्ल त्रयोदशी
⇒ पर्यूषण (श्वेताम्बर जैन)-भाद्रपद कृष्ण बारस से भाद्र शुक्ला पंचमी
⇒ संवत्सरी भाद्रपद शुक्ला पंचमी (क्षमायाचना दिन अगला)
⇒ रोट तीज - भाद्रपद शुक्ला तृतीया
⇒ दशलक्षण पर्व (दिगम्बर जैन)- भाद्रपद शुक्ला पंचमी से चतुर्दशी
⇒ सुगन्ध दशमी - भाद्रपद शुक्ला दशमी
⇒ पड़वा ढोक - आश्विन कृष्णा एकम (दिगम्बर का क्षमायाचना दिन)

↓ सिन्धी समाज के पर्व ↓

थदड़ी या बड़ी सातम - भाद्रपद कृष्णा 7 (बासोड़ा)
चालीहा महोत्सव - 16 जुलाई से 25 अगस्त तक
चेटी चण्ड झूलेलाल जयंती - चैत्र शुक्ला द्वितीया (वरुणदेवता के अवतार)
अखूचण्ड पर्व - शुक्ल पक्ष चौदस के दिन

↓ सिक्ख समाज के पर्व ↓

⇒ लोहड़ी - → 13 जनवरी, ⇒ वैशाखी = 13 अप्रैल - इस दिन खालसा पंथ की स्थापना गुरु गोविन्दसिंह 1699 ई. में की।
⇒ गुरुनानक जयन्ती - कार्तिक पूर्णिमा
⇒ गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती - पौष शुक्ला सप्तमी (जन्मदिवस)
⇒ सिक्खों के दसवें गुरु, गुरु ग्रन्थ साहिब गुरु, जन्म - 1666 पटना में

↓ ईसाई समाज के पर्व ↓ प्रवर्तक - ईसा मसीह

कालान्तर में ईसाईयों के दो प्रमुख मत - प्रोटेस्टेन्ट, रोमन कैथोलिक
⇒ क्रिसमस - 25 दिसम्बर (ईसा मसीह का जन्म दिन)
⇒ नव वर्ष दिवस - ईस्वी सन् की पहली जनवरी को
⇒ ईस्टर - अप्रैल माह में गुड फ्राइडे के बाद वाले रविवार को
⇒ गुड फ्राइडे - ईस्टर के रविवार के पूर्व वाले शुक्रवार को
⇒ असेन्सन डे - ईस्टर के 40 दिन बाद, ⇒ नवरोज - नववर्ष का प्रारम्भ

RAJASTHAN CLASSES

मुस्लिम समाज के त्योहार & प्रवर्तक-हजरत मोहम्मद

⇒ मोहर्रम - हिजरी सन् का पहला महीना
⇒ ईद-उल-मिलाद-उन्नबी (बारावफात) - रबी उल-अव्वल को
⇒ ईद-उल-फितर - (मीठी ईद) - रमजान माह में 30 दिन रोजे रखने के बाद शव्वाल माह की पहली तारीख को शुक्रिया के तौर
⇒ ईदुल जुहा (बकरा ईद) - जिलहिज माह की दसवीं तारीख को
⇒ शबे बारात - इस दिन हजरत मोहम्मद की अल्ला से मुलाकात
⇒ शबे कद्र - रमजान की 27वीं तारीख (कुरान उतारा जाता)

- विभिन्न उर्स (राजस्थान में)

⇒ उर्स गरीब नवाज, अजमेर - रज्जब माह की 1 से 6 तारीख तक साम्प्रदायिक सद्भाव व राष्ट्रीय एकता का अनूठा संगम।
⇒ गलिया कोट उर्स, डूंगरपुर - फखरुद्दीन पीर की मजार पर प्रतिवर्ष उर्स
⇒ तारकीन का उर्स, नागौर - काजी हम्मीदुद्दीन नागौरी की दरगाह पर
⇒ नरहड़ का मेला, झुन्झुनू - कृष्ण जन्माष्टमी के दिन मेला। हजरत हाजिब शकर बारपीर की दरगाह
डन्टे बागड़ का धनी भी कहते है।

⇒ विविध जानकारी ⇐

① ⇒ ग्रिगेरियन कैलेण्डर (अंग्रेजी कैलेण्डर) - अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कलेण्डर का वर्ष प्रारम्भ 1 जनवरी से शुरू 31 दिसम्बर समाप्त।
② इसके साथ शक संवत पर आधारित एकरूप राष्ट्रीय पंचांग जिसका पहला माह चैत्र एवं अंतिम फाल्गुन होता है 22-3-1957 को अपनाया
③ विक्रम संवत - प्रारम्भ 57 ई पूर्व (BC) में हुआ, प्रारम्भ - चैत्र शुक्ला एकम से समाप्ति चैत्र अमावस्या को, ग्रिगेरियन कलेण्डर से 57 वर्ष आगे रहता है।
④ हिजरी सन् - चन्द्रमा पर आधारित, मुहर्रम माह से जिलहिज तक
⑤ शक संवत - प्रारम्भ 78 ई. (78 AD) कुषाण शासक कनिष्क के काल में हुआ, प्रारम्भ - चैत्र प्रतिपदा से समाप्ति फाल्गुन 30 ग्रिगेरियन कलेण्डर से 78 वर्ष पीछे है।

RAJASTHAN CLASSES

। राजस्थान के प्रमुख मेले ।

चैत्र माह में भरने वाले मेले ।

⇒ फूलडोल मेला (रामद्वारा, शाहपुरा भीलवाड़)
रामस्नेही सम्प्रदाय द्वारा चैत्र कृष्णा प्रतिपदा से पंचमी तक

⇒ शीतला माता का मेला - (शील-डूंगरी, चाकसू, जयपुर)
चैत्र कृष्णा अष्टमी, ०

⇒ करणी माता का मेला - देशनोक, बीकानेर, (चैत्र | आश्विन)

⇒ जीण माता का मेला रेवासा, ग्राम सीकर - (चैत्र | आश्विन)

⇒ शाकम्भरी माता का मेला (शाकम्भरी सांभर) चैत्र | आश्विन

⇒ ऋषभदेव मेला - (धुलेव-उदयपुर) चैत्र कृष्णा अष्टमी | नवमी

⇒ धोटिया अम्बा मेला (बांसीगामा, बांसवाड़ा) चैत्र अमावस्या

⇒ कैलादेवी मेला (कैलादेवी, करौली) चैत्र शुक्ला अष्टमी को

⇒ पाबूजी का मेला (कोलूमण्ड, जोधपुर) (चैत्र अमावस्या)

⇒ गणगौर मेला - (जयपुर व उदयपुर) चैत्र शुक्ला तीज)
जयपुर व उदयपुर में गणगौर की सवारी,
नहाण मेला - सांगोद (कोटा), बादशाह मेला - ब्यावर (अजमेर
महावीर जी की लट्ठ मार होली, कोवड़ामार होली - मिनाय अजमेर

⇒ मेवाड़ में भीलों द्वारा गैर नृत्य, आदिवासियों में भगोरिया

⇒ जैसलमेर में केवल गवर की पूजा ईसर की नहीं
गणगौर की सवारी तीज को नहीं बल्कि चतुर्थी को निकाली जाती।

⇒ श्री महावीरजी मेला (महावीरजी, करौली)
चैत्र शुक्ला त्रयोदशी से वैशाख कृष्णा द्वितीया तक

⇒ मेहन्दीपुर बालाजी मेला - (मेहन्दीपुर बालाजी, दौसा) चैत्र पूर्णिमा

⇒ सालासर बालाजी मेला (सुजानगढ़, चुरू) चैत्र पूर्णिमा (हनुमानजयंती)

नोट ⇒ होली त्योहार के आस पास के मेले ↑

RAJASTHAN CLASSES

↓ वैशाख माह ↓

⇒ धींगागवर, बेतमार का मेला (जोधपुर) वैशाख कृष्ण तृतीया
⇒ उदयपुर के महाराणा राजसिंह प्रथम द्वारा अपनी छोटी महारानी को प्रसन्न करने के लिए रीति के विरुद्ध जबरदस्ती वैशाख कृष्ण तृतीया को धींगा गणगौर प्रसिद्ध हुआ।

⇒ बाणगंगा मेला ⇒ (विराटनगर, जयपुर) वैशाख पूर्णिमा
⇒ गोमतीसागर मेला (झालरापाटन, झालावाड़) वैशाख पूर्णिमा
⇒ मातृकुण्डिया मेला (राशमी, चित्तौड़गढ़) वैशाख पूर्णिमा
⇒ गौतमेश्वर (भूरियाबाबा) मेला (आसोद प्रतापगढ़) वैशाख पूर्णिमा।
सिरोही

ज्येष्ठ

⇒ सीताबाड़ी का मेला (सीताबाड़ी, केलवाड़ा बारां) ज्येष्ठ अमावस्या → सहरिया जनजाति का कुंभ
⇒ प्रताप जयंती (हल्दीघाटी, राजसमंद) ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया

↓ श्रावण माह ↓

⇒ कल्पवृक्ष मेला - (मांगलियावास, अजमेर) हरियाली अमावस्या
⇒ गुरुद्वारा बुड्ढा जोहड़ मेला (गंगानगर) श्रावण अमावस्या
⇒ श्रावणी तीज (छोटी तीज) मेला (जयपुर) श्रावण शुक्ला तृतीया
⇒ चारभुजानाथ (मीराबाई मेला) - मेड़ता सिटी नागौर, श्रावण शुक्ला एकादशी से सात दिन तक।

↓ भाद्रपद माह ↓

⇒ कजली तीज मेला (बून्दी) भाद्रपद कृष्ण तीज
⇒ जन्माष्टमी मेला (नाथद्वारा, राजसमंद) भाद्रपद कृष्ण अष्टमी
⇒ जोगानवमी (जोगामेड़ी, हनुमानगढ़) भाद्रपद कृष्ण नवमी
⇒ राणी सती का मेला (झुन्झुनु) भाद्रपद अमावस्या (शोक)
⇒ बाबा रामदेव मेला (मसूरिया, जोधपुर) भाद्रपद शुक्ला द्वितीया
⇒ रामदेवरा मेला (रामदेवरा, जैसलमेर) भाद्रपद शुक्ला द्वितीया से एकादशी तक।

RAJASTHAN CLASSES

⇒ गणेशजी का मेला (रणथम्भौर, सवाई माधोपुर) भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी
⇒ भोजन थाली मेला (कामां, भरतपुर) भाद्रपद शुक्ला पंचमी
⇒ नागपंचमी मेला - (मंडोर जोधपुर) भाद्रपद शुक्ला पंचमी
⇒ सवाई भोज मेला (आसींद भीलवाड़ा) भाद्रपद शुक्ला अष्टमी
⇒ भर्तृहरि मेला (भर्तृहरि अलवर) भाद्रपद शुक्ला अष्टमी
⇒ खेजड़ली शहीदी मेला (खेजड़ली-जोधपुर) भाद्रपद शुक्ला दशमी
⇒ सांवलिया जी का मेला (मंडफिया, चित्तौड़) भाद्रपद शुक्ला एकादशी

आश्विन (आवड़ा)
⇒ जसवंत पशु मेला (भरतपुर) आश्विन शुक्ला पंचमी से पूर्णिमा
⇒ दशहरा मेला - (कोटा) आश्विन शुक्ला दशमी

कार्तिक मेला
⇒ अन्नकूट मेला (नाथद्वारा, राजसमंद) कार्तिक शुक्ला एकम
⇒ पुष्कर मेला (पुष्कर, अजमेर) कार्तिक शुक्ला ११ से पूर्णिमा
⇒ चन्द्रभागा मेला - (झालरापाटन, झालावाड़) कार्तिक पूर्णिमा
⇒ कपिलमुनि का मेला (कोलायत, बीकानेर) कार्तिक पूर्णिमा

मार्गशीर्ष (मिगसर)
⇒ मानगढ़ धाम मेला (मानगढ़धाम, , बांसवाड़ा) मार्गशीर्ष पूर्णिमा

पौष
⇒ नाकोड़ा जी का मेला (मेवानगर, बाड़मेर) पौष कृष्ण दशमी

(माघ - माह)
⇒ श्री चौथ माता का मेला (चौथ का बरवाड़ा, स.मा.) माघ कृष्ण चतुर्थी
⇒ पर्यटन मरु मेला - (सम व जैसलमेर) माघ शुक्ला 13 से पूर्णिमा तक
⇒ बेणेश्वर मेला - (बेणेश्वर सावला, डूंगरपुर) माघ शुक्ला 11 से 15 (फरवरी माह लगभग)

RAJASTHAN CLASSES

↓ फाल्गुन (फागण) माह के मेले ↓

⇒ महाशिवरात्रि मेला - (शिवाड़, स.मा.) फाल्गुन कृष्ण 13
⇒ एकलिंग जी मेला (कैलाशपुरी - उदयपुर) —"—
⇒ रणकपुर मेला (रणकपुर, पाली) फाल्गुन शुक्ला 4 व 5
⇒ खाटूश्याम जी का मेला (सीकर) फाल्गुन शुक्ला 11 व 12
⇒ डाडा धम्माराम का मेला (विजयनगर, गंगानगर) फाल्गुन माह।

① नोट = आषाढ़ माह में किसी भी मेले का उल्लेख नहीं है।
② नोट - माघ व पौष माह में केवल 1-1 मेला भरता है।

वे मेले जो वर्ष में दो बार भरते हैं।

⇒ करणी माता (देशनोक, बीकानेर) नवरात्रा चैत्र आश्विन
⇒ जीण माता (सीकर) ⇒ शिलादेवी (जयपुर)
⇒ शाकम्भरी माता (जयपुर) ⇒ दधिमति माता (बारां)
⇒ चामुण्डा माता (जोधपुर) ⇒ त्रिपुर सुन्दरी (बांसवाड़ा)
⇒ अर्बुदा माता (सिरोही) - चैत्र पूर्णिमा व आश्विन पूर्णिमा
⇒ सुण्धा माता (जालौर) वैशाख व भाद्रपद शुक्ला 13 से पूर्णिमा
⇒ चन्द्रप्रभु मेला (तिजारा - अलवर) फाल्गुन शुक्ला सप्तमी एवं श्रावण शुक्ला दशमी।
⇒ इन्द्रगढ़ बीसल माता (बून्दी) चैत्र, आश्विन व वैशाख पूर्णिमा
⇒ सैपऊ महादेव (सैपऊ धौलपुर) फाल्गुन व श्रावण चतुर्दशी

= विभिन्न उर्स = उर्स

अजमेर ⇒ ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती का उर्स (रज्जब माह की 1 से 6 तक)
⇒ गागरोन उर्स (गागरोन, झालावाड़) ज्येष्ठ शुक्ल एकम
⇒ नरहड़ का मेला (नरहड़ झुन्झुनु) कृष्ण जन्माष्टमी
⇒ तारकीन का उर्स (हमीमुद्दीन नागौरी की दरगाह) नागौर
⇒ गलियाकोट का उर्स (डूंगरपुर) मुहर्रम की 27 तारीख

RAJASTHAN CLASSES

↓ राज्य के प्रमुख पशु मेले ↓

⇒ राज्य के पशुपालन विभाग द्वारा आयोजित →

⇒ ① श्री मल्लिनाथ पशु मेला, तिलवाड़ा - बाड़मेर (गौवंश - थारपारकर) चैत्र कृष्णा 11 से चैत्र शुक्ला 11 (अप्रैल) (कांकरेज) यह मेला लूनी नदी के किनारे भरता है।

⇒ ② श्री बलदेव पशु मेला (मेड़ता - नागौर) गौवंश - नागौरी
— चैत्र शुक्ला 1 से पूर्णिमा तक (अप्रैल)

⇒ ③ श्री तेजाजी पशु मेला (परबतसर - नागौर) वंश - नागौरी
⇒ श्रावण पूर्णिमा से भाद्रपद अमावस्या तक (अगस्त)

⇒ ④ श्री रामदेव पशु मेला (मोमासर, नागौर) गौवंश - नागौरी
माघ शुक्ला एकम से माघ पूर्णिमा (फरवरी)

⇒ ⑤ श्री गोमतीसागर पशु मेला (झालरापाटन - झालावाड़) (गौवंश - मालवी) वैशाख सुदी 13 से ज्येष्ठ सुदी 5 तक (मई)

⇒ ⑥ चन्द्रभागा पशु मेला (झालरापाटन) गौवंश - मालवी
कार्तिक शुक्ला 11 से मार्गशीर्ष कृष्णा 5 तक (नवम्बर)

⇒ ⑦ गोगामेड़ी पशु मेला (हनुमानगढ़) वंश हरियाणवी
श्रावण पूर्णिमा से भाद्रपद पूर्णिमा तक (अगस्त)

⇒ ⑧ जसवंत पशु मेला - भरतपुर (हरियाणवी - गौवंश)
आश्विन शुक्ला 5 से 14 तक (अक्टूबर)

⇒ ⑨ कार्तिक पशु मेला, (पुष्कर) गौवंश - गीर
कार्तिक शुक्ला 8 से मार्गशीर्ष 2 तक (नवम्बर

⇒ ⑩ शिवरात्रि पशु मेला (करौली) गौवंश - हरियाणवी
फाल्गुन कृष्णा तेरस से प्रारम्भ (मार्च)

RAJASTHAN CLASSES

⇒ पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित मेले व उत्सव

	स्थान	माह
⇒ ऊँट महोत्सव	(बीकानेर)	जनवरी
⇒ मरु महोत्सव	(जैसलमेर)	जनवरी-फरवरी
⇒ जैसलमेर पतंग महोत्सव	(जैसलमेर)	(फरवरी)
⇒ एडवेंचर स्पोर्ट्स	(कोटा)	फरवरी
⇒ बृज/ब्रज महोत्सव	(भरतपुर)	फरवरी
⇒ शेखावाटी महोत्सव	(सीकर, झुन्झुनु, चुरु)	फरवरी
⇒ बेणेश्वर मेला	(डुंगरपुर)	फरवरी
⇒ हाथी महोत्सव	(जयपुर)	मार्च
⇒ मेवाड़ महोत्सव	(उदयपुर)	अप्रैल
⇒ महावीर जी मेला	(करौली)	अप्रैल
⇒ कैलादेवी	(करौली)	अप्रैल
⇒ बैलून महोत्सव	(बाड़मेर) (बाड़मेर)	अप्रैल
⇒ ग्रीष्म महोत्सव (समर फेस्टिवल)	(माउंट आबू, जयपुर)	जून
⇒ कजली तीज	(बून्दी)	अगस्त
⇒ मारवाड़ महोत्सव	(जोधपुर)	अक्टूबर
⇒ चन्द्रभागा मेला	(झालावाड़)	अक्टूबर, नवम्बर
⇒ शरद महोत्सव	(माउंट आबू)	दिसम्बर
⇒ बून्दी महोत्सव	(बून्दी)	दिसम्बर
⇒ डीग महोत्सव	(डीग भरतपुर)	जन्माष्टमी
⇒ थार महोत्सव	(बाड़मेर)	

⇒ पर्यटन विकास निगम की स्थापना अप्रैल 1979 में हुई।
⇒ 1989 में मोहम्मद यूनुस समिति की सिफारिशों पर राज. में पर्यटन को उद्योगों का दर्जा दिया।
⇒ राजस्थान में सर्वाधिक पर्यटक जीव ऋतु में आते हैं।

RAJASTHAN CLASSES

RAJASTHAN CLASSES

पीडीएफ के किसी भी भाग पर क्लिक करने पर आपको youtube क्लास मिल जाएगी

सभी पीडीएफ निशुल्क उपलब्ध करवाई जाएगी
पीडीएफ को ज्यादा से ज्यादा शेयर जरुर करें
आपके हित में सदैव तत्पर : आदर्श कुमावत

राजस्थान क्लासेज के साथ जुड़कर अपनी तैयारी को पंख दीजिये और विषयानुसार बनी प्लेलिस्ट से पढ़कर अपनी तैयारी बेहतर करें

टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

RAJASTHAN CLASSES